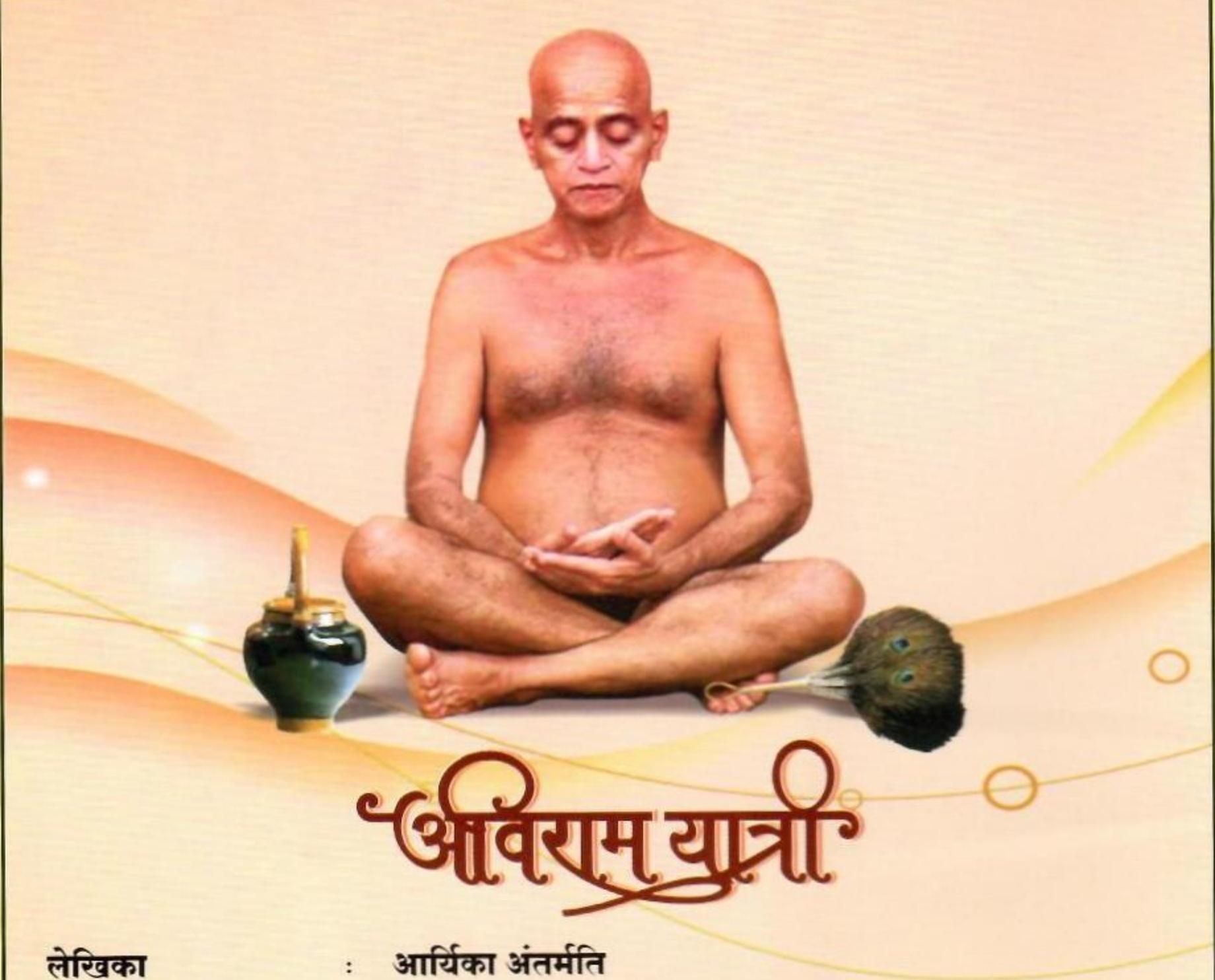


विद्यसागर



आर्यिका अंतमीति

www.vidyasagar.guru



ॐ विराम यज्ञी

लेखिका

: आर्यिका अंतर्मति

चित्रांकन

: इश्वाद कप्सान

प्रतियाँ

: 10,000

प्राप्ति स्थल

: जैन विद्यापीठ
सागर (म.प्र.)

पुण्यार्जक

: गुलशन राय जैन (गाजियाबाद वाले)
शंकुतला-गुलशन राय जैन, शशी-अजय कुमार जैन
मेघा-अंकित जैन, जिया, अहाना, अल्पना जैन
ए-39/203, रॉयल पैराडाइस अर्पाटमेंट
तिलक नगर, जयपुर - 302004
फोन : 9414009489

मुद्रक

: विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र, गोविन्दपुरा, भोपाल
फोन : 0755-2601952, 9425005624

दक्षिण भारत के कर्नाटक प्रांत के बेलगाँव जिला के अन्तर्गत सदलगा ग्राम है। जहाँ पारिसप्पा अष्टगे के पुत्र श्रावक श्रेष्ठी श्री मल्लप्पाजी अष्टगे अपनी धर्मपत्नी के साथ निवास किया करते थे।



श्रीमंती की कृपिका ने कृत दस सन्तानों को जन्म दिया, उनकी छह सन्तानें असमय में ही काल कविता हो गई। धार्मिक वृत्ति के कारण अष्टगे दंपति ने द्वितीय पुत्र विद्याधर को छोड़कर शेष तीन पुत्रों के नाम तीर्थीकरण के नाम पर रखे। महावीर, (द्वितीय पुत्र विद्याधर) अनन्तनाथ, शांतिनाथ। शांत मुद्दा के कारण ज्येष्ठा पुत्री ने शांता, तो स्वर्ण सी द्वितीय देह के कारण कनिष्ठा पुत्री ने स्वर्ण नाम पाया।

द्वितीय पुत्र अद्वितीय ही रहा। अपनी माँ श्रीमंती को स्वप्न देकर गर्भ में आया, विद्याधर के गर्भ में आते ही श्रीमंती ने स्वप्न में देखा कि एक चक्र तेजी से चलता हुआ आ रहा है..... आ रहा है और आकर उनके कक्ष के साथ उत्तर आया।

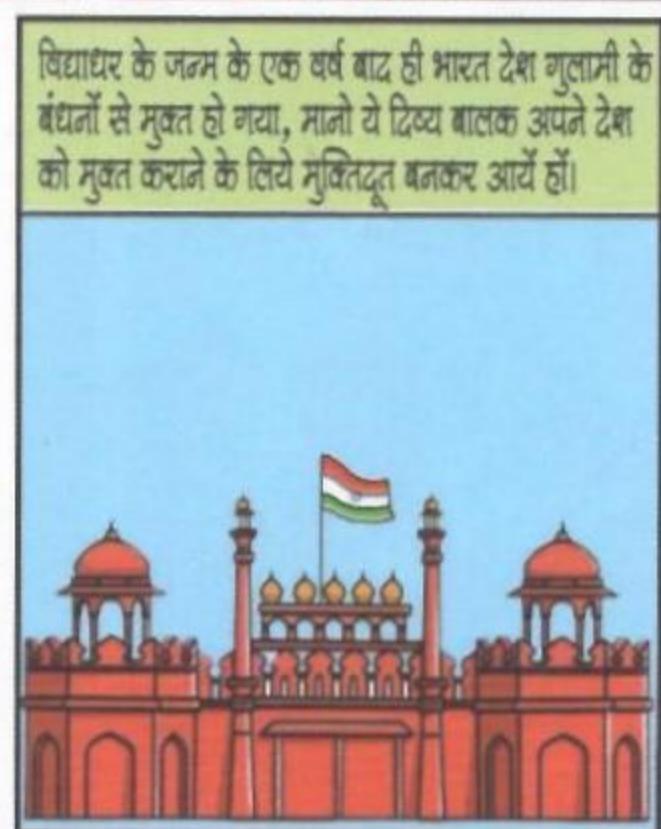


दूसरा स्वप्न था आकाश से दो क्रष्णिधारी मुनिराज
उत्तर कर आ रहे हैं और आकर उनके सम्मुख ठहर गये।



ओ मेरे लाल, तुझे
पाकर मैं धन्य
हो गई।

तू मेरी उम्मीदों का
आकाश है।



बालक विद्याधर का जन्म वि.सं. 2003 आशिवन
शुक्रवार पक्ष पूर्वम अर्ध्यात् 10 अक्टूबर 1946 दिन
गुरुवार को रात्रि साढ़े बारह बजे सदलगा के निकट
चिकित्सी के अस्पताल में हुआ।

सद्लणा से 18 कि.मी. दूर अविकल्पाट ग्राम है। वहाँ मुनिश्री विद्यासागर की समाधि स्थली है अपने दंपति प्रायः वहाँ जाया करते थे। उन्हीं की स्मृति में इस दंपति ने अपने द्वितीय पुत्र का नाम विद्याधर रखा पुत्र की मनोहारी बाल चेष्टाएं देखकर परिवार जन एवं पड़ोसी उसे तोता, गिरी, पीतू आदि अन्य नामों से भी पुकारा करते थे। जब बालक विद्या नुस्क-नुस्क कर घर के आंगन में चलते तो उसे देखकर माता-पिता पूते नहीं समाते थे।

विद्याधर की बाल्यावस्था मनोहारी एवं आश्चर्य में डालने वाली घटनाओं से भरी है तैरने के बहाने बाबू में ध्यान लगाना, हाथ छोड़ साइकिल चलाना, मूँगफली के छिलके से भी भेद विज्ञान करना।



नित्य देव दर्शन करना, माता-पिता का सम्मान करना, गुरुजनों का आदर करना आदि चेष्टाओं से विद्या ने परिवार बालों का ही नहीं, गौव बालों का भी दिल जीत लिया था।



“मल्लप्पा जी, आपके पुत्र के संस्कार तो बहुत ही अच्छे हैं। बड़ा होकर यह अपने खानदान में चार चाँद लगायेगा।”



मक्खन उन्हें बहुत पसंद था। श्रीमंती जब दही मधती थी तब वह उनके आस-पास ही मंडराते रहते। माँ भी हाथों में मक्खन थमा देती थी।



नेतृत्व की प्रखर क्षमता तो उनके अंदर बचपन से ही है। अपनी बाल मिक्र मण्डली में वे सदा नेता रहते, उनके बिना मिक्रों को खेल में आनन्द ही नहीं आता था।



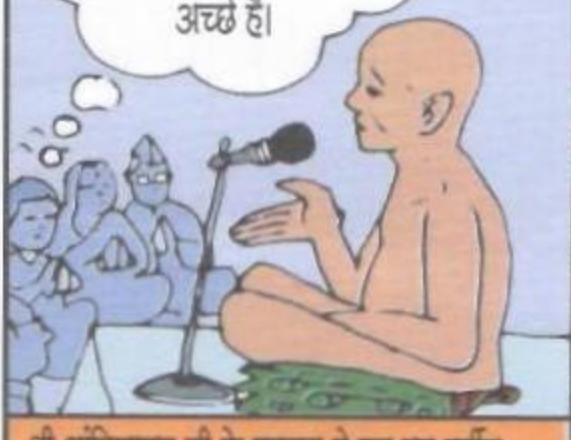
राजा की भौति ऊंचे टीले पर बैठना, दरबारियों की भौति उनके मिक्रों का नीचे बैठना, गंभीर मुदा में मिक्रों की समस्या सुनना, महाराजाओं की तरह बीच-बीच में सिर हिलाना, समस्याओं का समाधान देना आदि कियाएं देखकर गांव बाले अनुमान लगाया करते थे— कि अबशय ही ये बालक एक दिन किसी उच्च पद पर आसीन होंगा। एक दिन बालक विद्याधर अपने मिक्रों के साथ गिल्टी खेल रहे थे तथा खेलखेल में वह गिल्टी एक गुफा के निकट जा गिरी। विद्याधर नुफा में गिल्टी उठाने पहुंचे तो देखा वहाँ एक दिग्मवर मुनिराज बैठे हैं। उनका नाम मुनिश्री महाबल था, विद्याधर ने उन्हें नमोऽस्तु किया और गिल्टी उठाकर बापस आने लगे तो मुनिराज ने भव्य जीव जानकर उन्हें पुकारा :-





एक बार शेड्वाल में आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज का आगमन हुआ, मल्लप्या जी सपरिवार उनके दर्शनार्थ गये तब विद्याधर की उम्र मात्र नींवर्ष की थी।

ये महाराज! जी कितने
अच्छे हैं।



श्री शांतिसागर जी के प्रवचन ने उन नव बर्षीय बालक के अंदर बैराण्य का बीज अंकुरित कर दिया।

उनका एक अंतरंग सखा मारुति था। इनको वह प्रत्येक बात बताते थे। कभी कभी मारुती से कह उठते

तुझे नहीं लगता
की संसार में कोई
सार नहीं है।



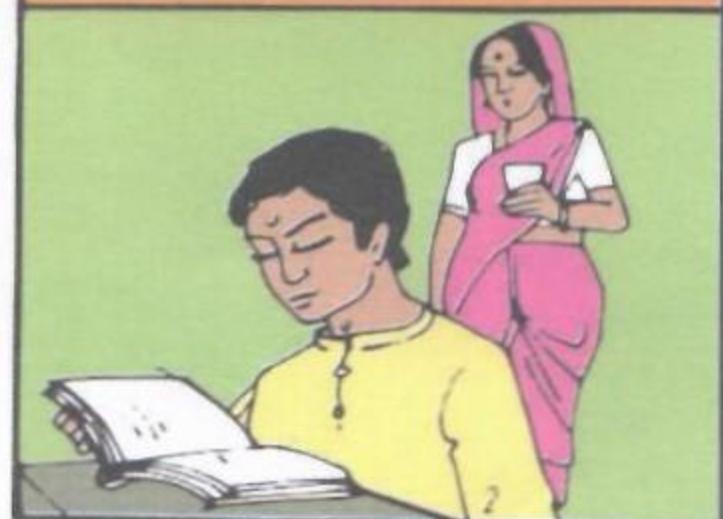
जब विद्याधर 12 वर्ष के थे, तभी सदलग्ना में आचार्यश्री देशभूषण जी का पदापान हुआ उनके साक्षियत में ग्रामसालियों ने मूँजीबंधन का कार्यक्रम रखा। पिताजी की आज्ञा न छोटे हुए भी विद्या अपने बड़े भाई के साथ उस कार्यक्रम में पहुँच गये आचार्य प्रबल के साक्षियत में उनका मूँजीबंधन हुआ और रव्वप्रथम उन्हें ही सोने की तीज टर बाला जन्म आया।



एक बार बार नौव में मुनिश्री शांतिसागर जी महाराजजी की समाधि चल रही थी। वे उनकी सेवा एवं वैयावृत्ति हेतु वहाँ भी पहुँचे।



महापुरुषों से मिलने का उन्हें बिशेष चाह था। एक बार सांगली में नेहरूजी आये थे, अपनी मिशनांडली के साथ उन्हें देखने जा पहुँचे। जिप्पानी ने बिनोबाबावे जी को देखने भी पहुँचे। विद्याधर ने कहाँ चाह माध्यम से नींवी कक्षा तक अध्ययन किया। उसके पश्चात् उनका मन लौकिक अध्ययन से छटकर पारलौकिक अध्ययन में लग गया।

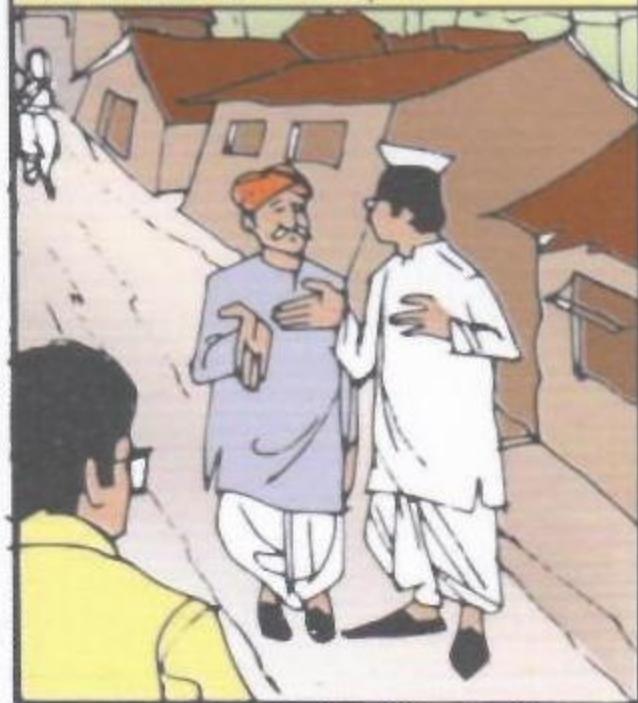


उनकी इस शांति, सदी हुई बैराण्य प्रवृत्ति से घर के लोग चिंतित रहने लगे। माँ श्रीमंती तो जब चाहे रो देती -

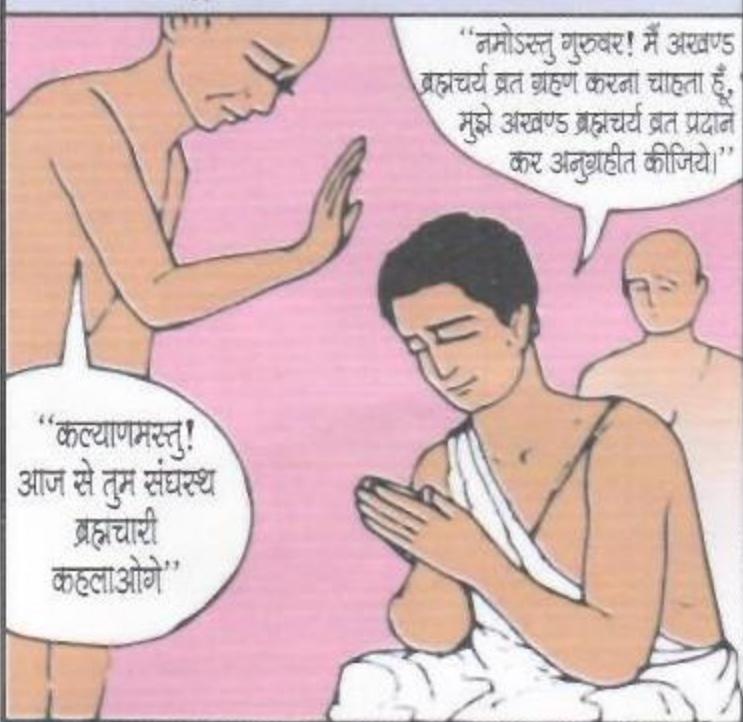


अचानक विद्याधर के मन में गृहत्याग के भाव तीख बेग से उमड़ने लगे। उनने यह बात अपने मित्र मारुति को भी बताई और उसके सहयोग से एक दिन विद्याधर ने 26 जुलाई 1966 को सदलगा हमेशा हमेशा के लिये त्याग दिया। घर में कोहराम मच गया। अनन्तनाथ, शांतिनाथ माता-पिता को यह पूछ-पूछ कर उत्तेजित कर रहे कि-

महावीर और मलतप्पा जी ने आसपास के सारे गाँव खोज लिये पर विद्या का कर्ण पता न चला। मारुति के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था कि विद्याधर किस दिशा की ओर उड़ गये।



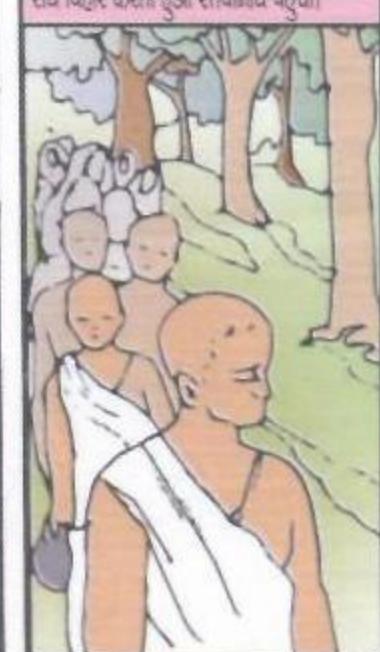
और इधर जयपुर, खानियाँ पहुँचकर विद्याधर ने 1966 में आचार्यश्री देशभूषणजी से आजीवन ब्रह्मचर्य ब्रत ग्रहण कर लिया।



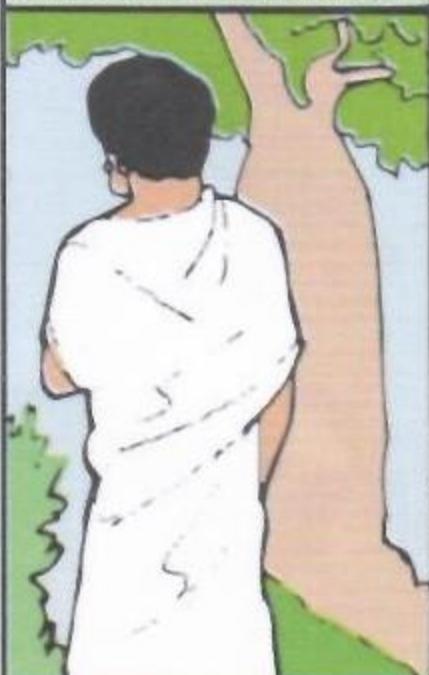
आचार्यश्री देशभूषणजी ससंघ के साथ ब्रह्मचारी विद्याधर ने श्रवण बेलगोला की यात्रा की और वहाँ पर उन्होंने सप्तम प्रतिमा के ब्रत अंगीकार किये।



ब्रह्मचारी विद्याधर की नुलभावित, दृढ़ता, वैराज्य एवं दैवावृत्ति से आचार्यश्री देशभूषणजी अत्यंत प्रसन्न रहा करते थे। श्रवण बेलगोला से संघ छोड़ करता हुआ सत्वनिधि पहुँचा।



सत्वनिधि क्षेत्र सदलगा के निकट ही था। ब्रह्मचारी विद्याधर सोचते कि यदि मैं यहाँ रुँगा तो सदलगा से टोरों का आता जान बढ़ा रहेगा और मेरी साधना में विद्व उत्पन्न होना।



इसीलिये अजमेर के श्रावक श्रेष्ठी कंजौड़ीमल जी के साथ वे मदनगंज किशनगढ़ में विराजमान गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज के पास गये। गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, विद्यवृद्ध और एक पहुँचे हुए साधक थे।



दर्शन करने के पश्चात् कंजौड़ीमल, ने गुरुवर से - कहा कि

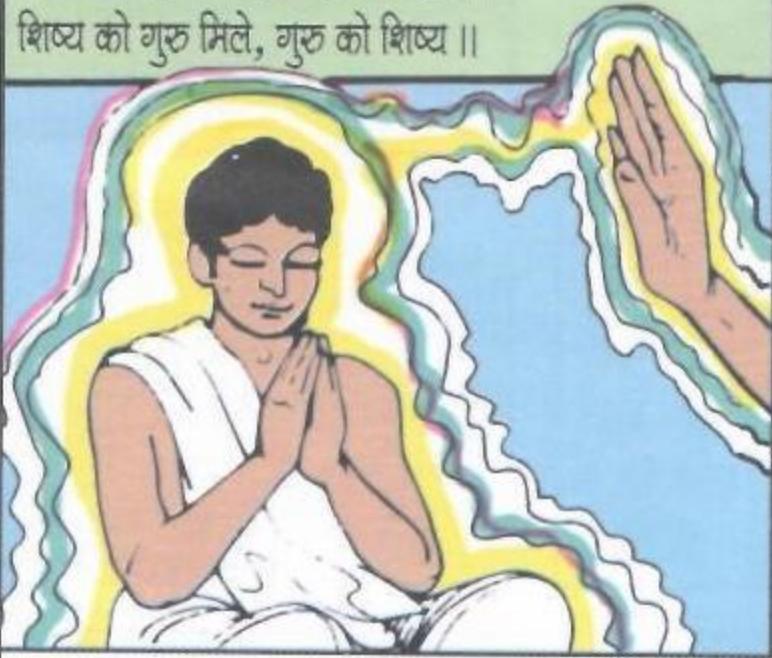


आचार्यश्री ज्ञानसागरजी ने कहा
“विद्याधर नाम है तो विद्याधरों की तरह
विद्या लेकर उड़ तो नहीं जाओगे,
फिर मैं श्रम क्यों करूँ?”



सुनकर ब्रह्मचारी विद्याधर तड़प उठे

यहाँ से प्रारम्भ होती है गुरुकृपा एवं शिष्य समर्पण की कथा।
हीरे को जौहरी मिला, जौहरी को हीरा।
शिष्य को गुरु मिले, गुरु को शिष्य ॥



गुरु ज्ञानसागरजी उच्च कोटि के विद्वान् थे। विद्याधरजी को पढ़ाते वक्त शास्त्र को हाथ में नहीं लेते। उन्हें शास्त्रों की सारी जाणार्थी, टीकार्ये कंठस्थ थीं। वो विद्वा ग्रन्थ के विद्याधरजी को शास्त्रों का ऐसा अध्ययन कराते मानो शास्त्र उनके कर कर्मानों में ही हो। विद्याप्रति विद्या कबूल भारी थी। उन्हें हिन्दी नहीं आती थी। तथापि उनके पास गुरु भक्ति, विनय, समर्पण एवं अध्ययन के प्रति लग्न थी। गुरुभक्ति, समर्पण एवं लग्न के साध्यम से उनके ज्ञान का क्षयोपशम विशेष स्फुरण से प्रणट हो जाय। हिन्दी भाषा न जानते सुर भी गुरु की बातें उन्हें इसी भक्ति एवं समर्पण में समझ में आने लगी। जहाँ कहा विद्या को विषय कितन लगता नुह कहते -



गुरु की इस बात पर श्रद्धान करते हुए विद्या पढ़ते जाते थे।

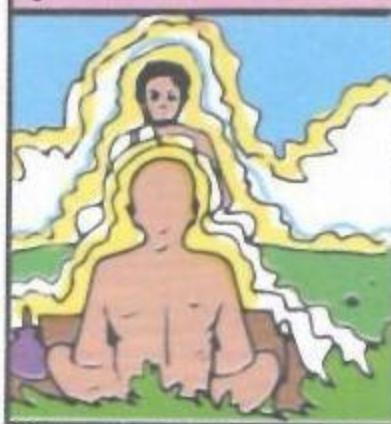
“मैं उड़ने नहीं आपके चरणों में रमने
आया हूँ। आपको विश्वास नहीं तो
मैं आज से, अभी से आजीवन
बाहन का त्याग करता हूँ”



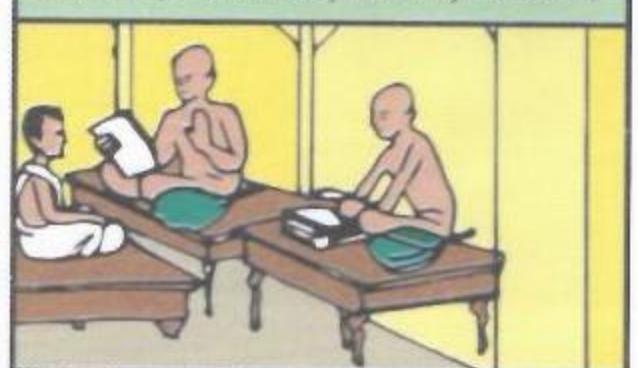
गुरुवर ज्ञानसागर जी के दर्शन के कुछ दिन उपरांत ही ब्रह्मचारी विद्याधर
ने भोजन में नमक एवं मीठा लेने का आजीवन त्याग कर दिया।

इसी तरह समर्पित
रहोगे तो एक दिन मैं तुम्हें
विद्यानन्दि बना दूँगा ।

शिष्य की गुरुभक्ति, समर्पण, विनय
और वैराग्य ने गुरु का हृदय जीत लिया।
अब तो ज्ञान गुरु अपना सारा ज्ञान,
अध्यात्म के रूपस्थ अपने शिष्य को देने
को बेचैन हो उठे। गुरु देते, शिष्य लेते।
गुरु पिलाते शिष्य पीते।



स्वयं अध्ययन कराने के साथ-साथ गुरुवर ज्ञानसागर जी ने
ब्रह्मचारी विद्याधर को अन्य पंडित विद्वानों से भी अध्ययन कराया जैसे
पंडित महेन्द्रकुमार जी पाटीनी, ब्रह्मचारी विद्याकुमार सेठी। आचार्यश्री
ज्ञानसागर जी के द्वारा ब्रह्मचारी विद्याधर को अध्ययन कराने का
समय इस प्रकार था- प्रातः 5.30-6.30 तक अध्यात्म तरंगनी और
समयसार कलश, 7-8 प्रमेय रत्नमाला, 8-9 समयसार, 9.30-
10.30 आहारचर्चा, 10.30-11.30 अष्टसहस्री, दोपहर 1-2
कांत्रंबरूपमाला, 3-4 पंचास्तिकाव, 4-5 पंचतंत्र, 5-6 व्याकरण।



कजौड़ीमल जी को श्री ज्ञान गुरु ने विद्या की देखरेख के लिये नियुक्त किया था।
विद्या जब रात को एक-एक बजे तक पढ़ते तो कजौड़ीमल जी उनके हाथ से ग्रन्थ
लेते हुए उन्हें जबरदस्ती सुलाते।



“अब सो भी जाओं ब्रह्मचारी
जी। रात का एक बज गया है”

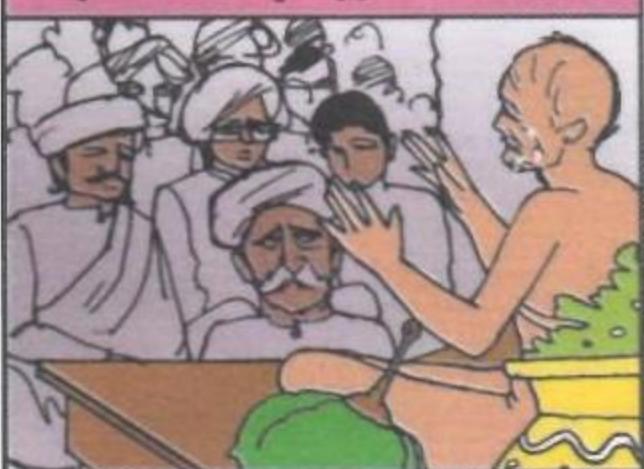
प्रातः होते ही विद्या अपने विषय के साथ
गुरु चरणों में प्रस्तुत हो जाते।



अजमेर के घर-घर में ही नहीं अजमेर वासियों के घट-घट में युवा तपस्वी बस गये। मंदिरों में, चौराहों पर, घरों में, दुकानों में विद्या के तप त्याग एवं समर्पण भक्ति की चर्चा होने लगी।



ब्रह्मचारी विद्याधर को ज्ञान गुरु ने जिस ओर से परखा ब्रह्मचारी उसी ओर से खड़े उतरे। अतः गुरु श्री ज्ञानसागरजी के मानस में अपने इस शिष्य शिष्य को दिनभरी दीक्षा देने के भाव तीव्र देख से उमड़ने लगे। जब आचार्यश्री ज्ञानसागर जी ने ब्रह्मचारी विद्याधर को मुनि दीक्षा प्रदान करने की बात अजमेर की जैन समाज के सम्मुख दर्खाते तो सभी लोग सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए किंतु कुछ ने विरोध प्रकट कर दिया।



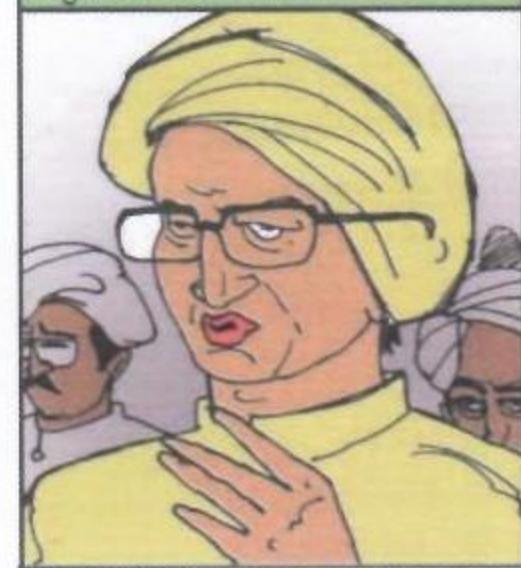
दीक्षण का रहने वाला है, हिन्दी तक नहीं आती।

लोग तरह-तरह की बातें करने लगे -

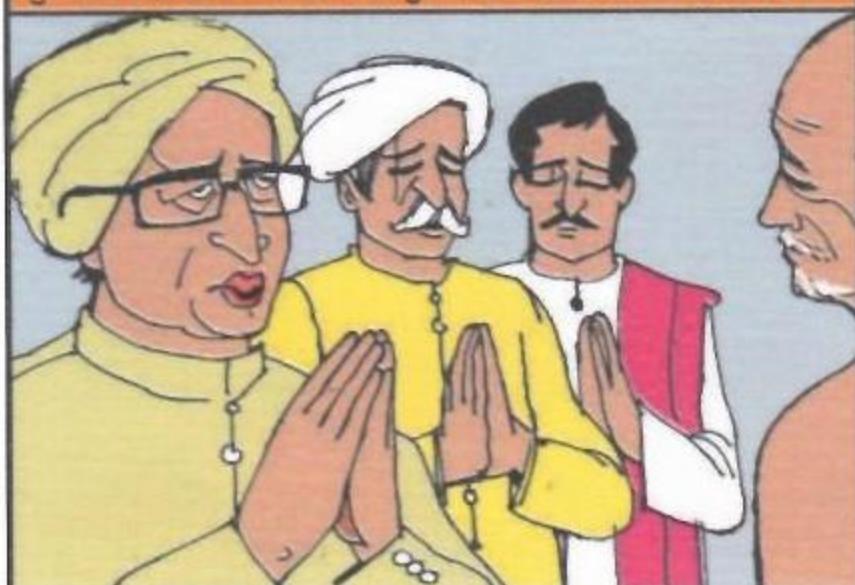
अभी एक ही वर्ग हुआ है
महाराज जी को ज्ञानी
जट्ठी नहीं करना चाहिए।



तरह-तरह की चर्चाओं से अजमेर का बाजार गर्म हो गया। उस विरोधी दल में भागचंद सोनी प्रमुख थे। पहले इतनी कम उम्र में मुनि दीक्षा नहीं होती थी। अतः उनका ब्रह्मचारी विद्याधर जी की इस अल्पवय में मुनिदीक्षा का प्रबल विरोध था।



उनके नेतृत्व में समस्त विरोधी गुरु ज्ञानसागर जी महाराज के पास पहुँचे। सबने मिलकर ब्रह्मचारी विद्याधर जी को मुनि दीक्षा का विरोध प्रकट किया - “गुरुबर” पहले ब्रह्मचारी विद्या की क्षुल्लक, ऐलक दीक्षा हो फिर उसके कुछ समय बाद मुनि दीक्षा हो, ब्रह्मचारी जी की सीधी मुनि दीक्षा से हमारी समाज सहमत नहीं है।



ज्ञान गुरु सबकी बातों को ध्यान से सुन रहे थे। जब सभी अपना विरोध प्रकट करने के पश्चात् चुप हुए तो गुरुबर बोले -

“कौन शिष्य दीक्षा के योग्य है कौन नहीं?” इस बारे में समाज से अधिक एक गुरु जानते हैं, मैंने विद्या को हर ओर से, अच्छी तरह परख लिया है। वह सौ टंच सोना है और मैं दीक्षा दे नहीं रहा वह दीक्षा ले रहा है। सम्पूर्ण साधना उसकी है, मैं तो एक निमित्त मात्र हूँ।

“सच्चे साधक को साधना पथ पर आगे बढ़ने से रोककर आप सभी अंतराय कर्म कर्यों बांध रहे हैं और मैं उसकी साधना को देखकर पूर्ण रूप से निश्चिन्त हूँ। वह भविष्य में श्रमण संस्कृति को बहुत ऊँचाईयों पर ले जायगा।”



“श्रमण परम्परा उससे गौरवान्वित होगी किन्तु आप लोगों को ब्रह्मचारी जी की चर्या में संदेह हो तो आप दीक्षा की तैयारियाँ सत कीजिये। ऐसे भव्य एवं होनहार जीव को मैं एक वृक्ष के तले दिगम्बरी दीक्षा प्रदान कर दूँगा।”



सभी ने तत्काल मिलकर ब्रह्मचारी विद्याधर की मुनिदीक्षा के विरोध की गुरु से क्षमा मांगी।

“गुरुवर हमने अज्ञानतावश ब्रह्मचारी विद्याधर की मुनिदीक्षा का विरोध करके बहुत बड़ी गलती की है। हम अपनी इस गलती की आप से बारंबार क्षमा चाहते हैं।”



गुरु श्री ज्ञानसागर जी की दर्ते सुनकर विद्यारियों का विरोध रमात हो गया

“सही बात है हम समाज वाले, गुरु से ज्यादा ज्ञानवान कैसे हो सकते हैं?

अपने शिष्य के बारे में तो”

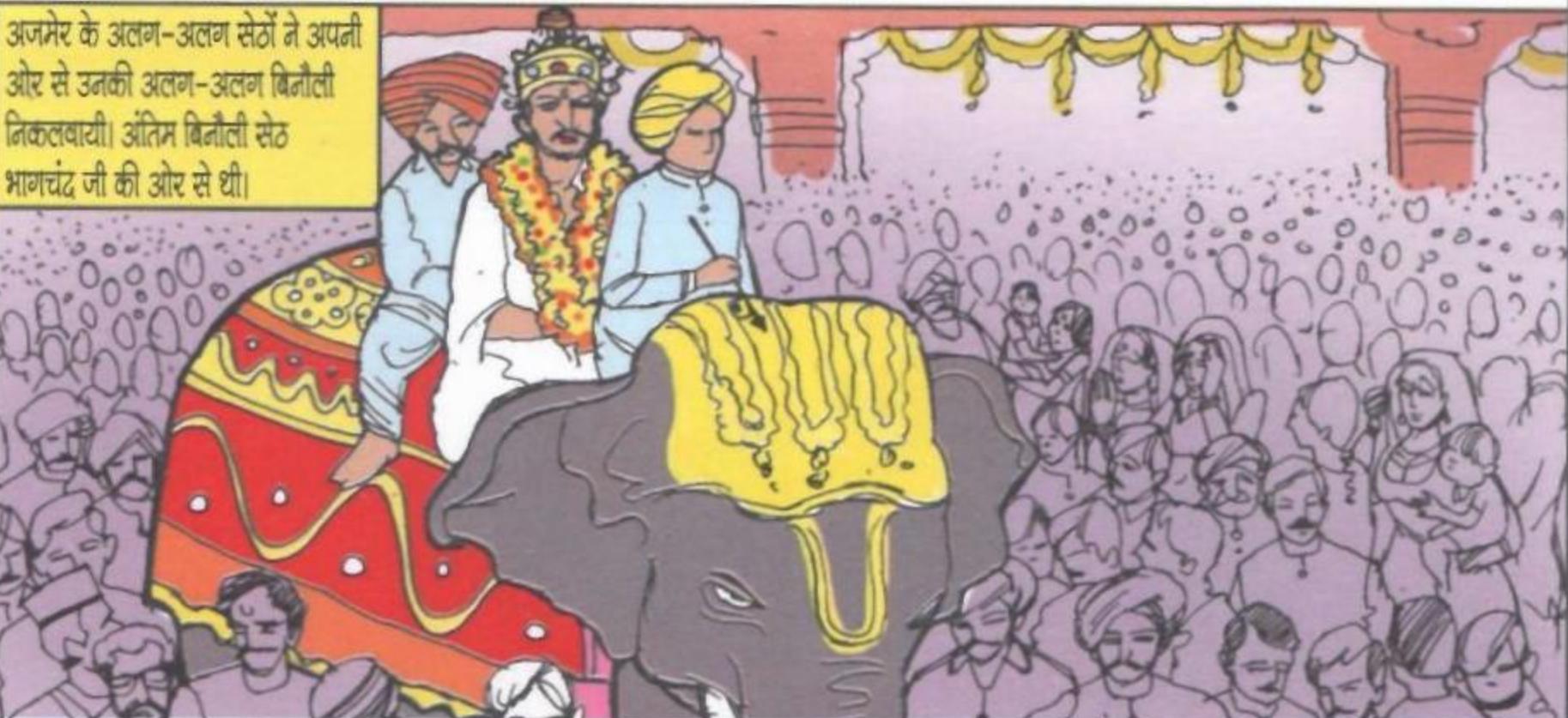
“गुरु ही अच्छी तरह जाते हैं। जब गुरु ने ब्रह्मचारी को अच्छी तरह परख लिया है तो हम दीक्षा में बाधिक बनकर अंतराय कर्म क्यों बांधें?”

“हाँ...हाँ...हाँ... हमें दीक्षा का विरोध नहीं करना चाहिए”

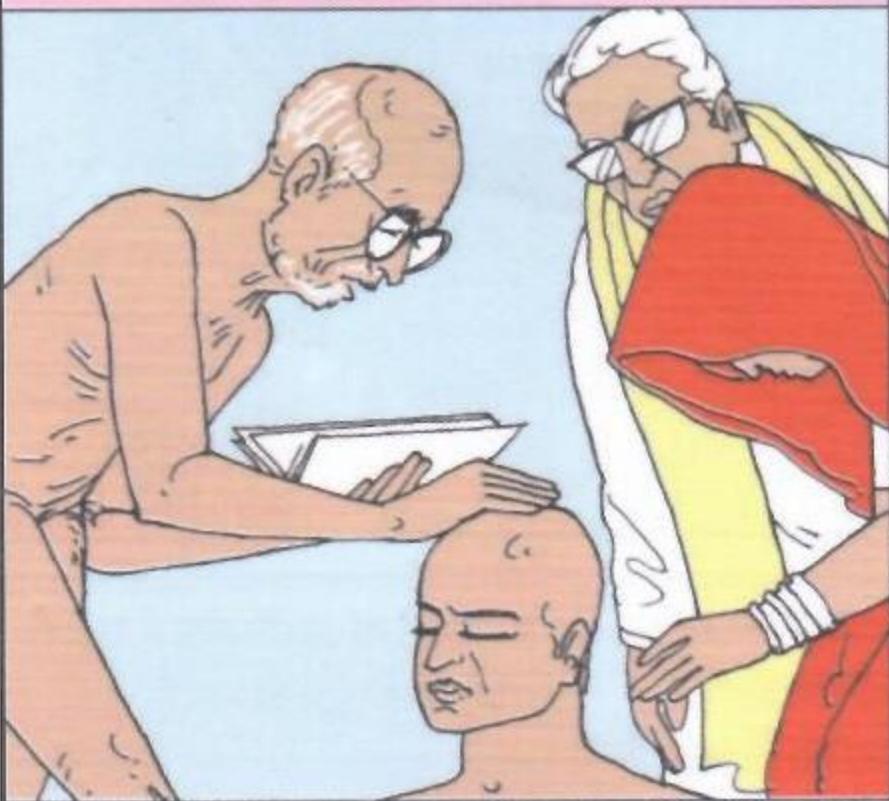
“महाराज! आप निश्चिन्त रहें हम अजमेर वासी मिलकर ब्रह्मचारी विद्याधर की मुनिदीक्षा की भव्य तैयारिया करते हैं।”

और प्रारंभ हो गई अजमेर नगर में ब्रह्मचारी विद्याधर की मुनिदीक्षा की भव्य तैयारियाँ।

अजमेर के अलग-अलग सेठों ने अपनी ओर से उनकी अलग-अलग विनौली निकलवायी। अंतिम विनौली सेठ भागचंद जी की ओर से थी।



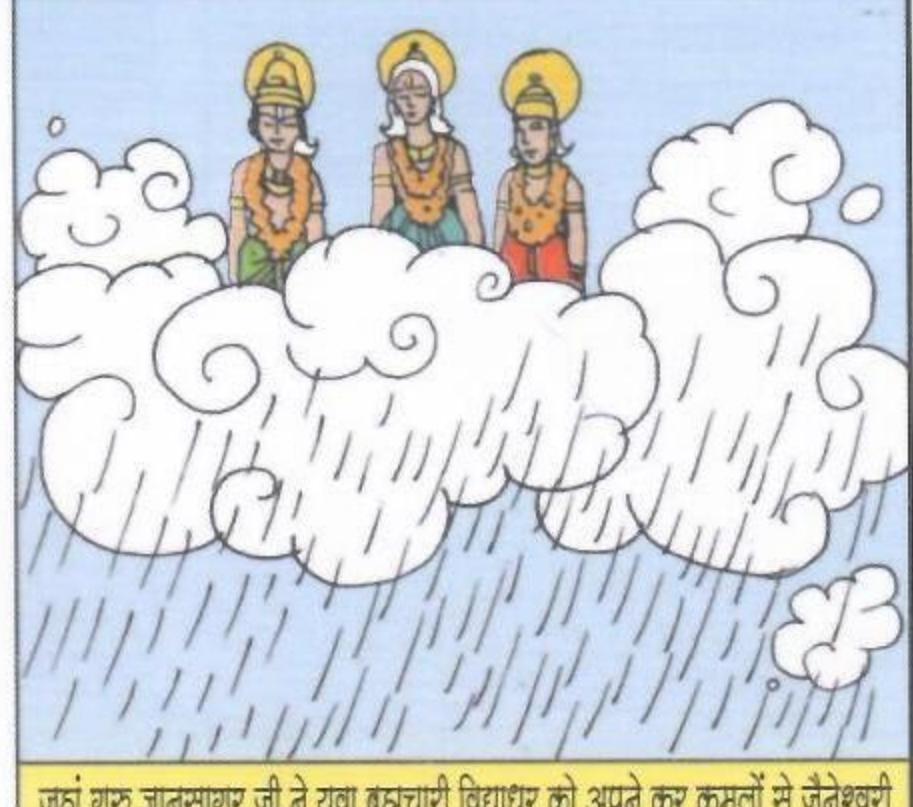
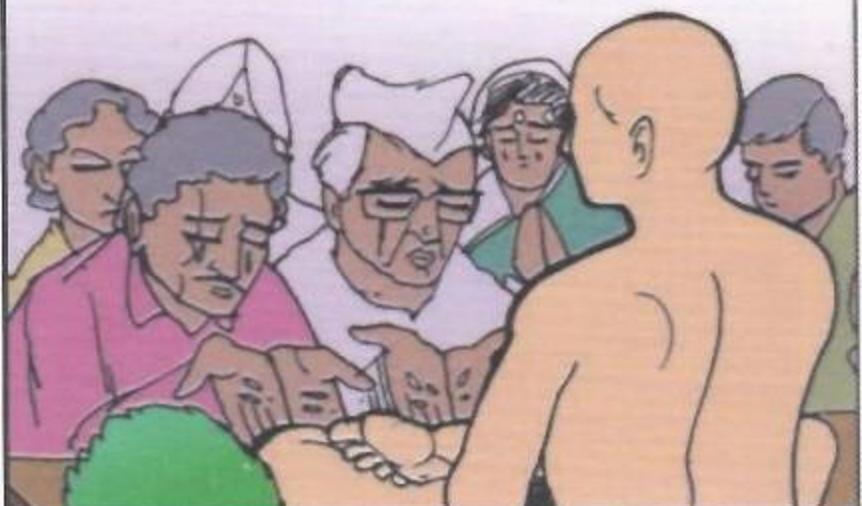
अजमेर प्रबासी ठुकुमचंद जी लुहाड़िया एवं उनकी धर्म पत्नि जतनकुंबर लुहाड़िया ने दीक्षा के समय ब्रह्मचारी विद्याधर के धर्म के माता पिता बनने का महासौभाग्य अर्जित किया। सद्लगा से ब्रह्मचारी विद्या के ज्येष्ठ भ्राता महावीर भी दीक्षा के समय अजमेर पहुँचे और आषाढ़ सूटी पंचमी वि.सं. 2025 तदनुसार 30 जून 1968 अजमेर सोनी जी की नसिया में उद्दित हुआ श्रमण संस्कृति का प्रखर सूर्य।



श्रमण परम्परा को प्राप्त हुआ एक युवा योगी मुनिश्री विद्यासागर।



पिता मल्लप्पा जी ने अपने पुत्र मुनिश्री विद्यासागर की पूजन में स्वर्ण के 108 पुष्प पुंज अर्पित किये।



जहां गुरु ज्ञानसागर जी ने युवा ब्रह्मचारी विद्याधर को अपने कर कमतों से जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की वैसे ही जून की चिलचिलाती धूप में सहसा ही बादल की टुकड़ी आ गयी। और प्रारंभ हो गई धीमी-धीमी मंद सुहावनी वर्षा। मानों देवताओं ने ही प्रसन्नता पूर्वक जलवृष्टि के माध्यम से विद्याधर की दीक्षा की अनुमोदना की है।

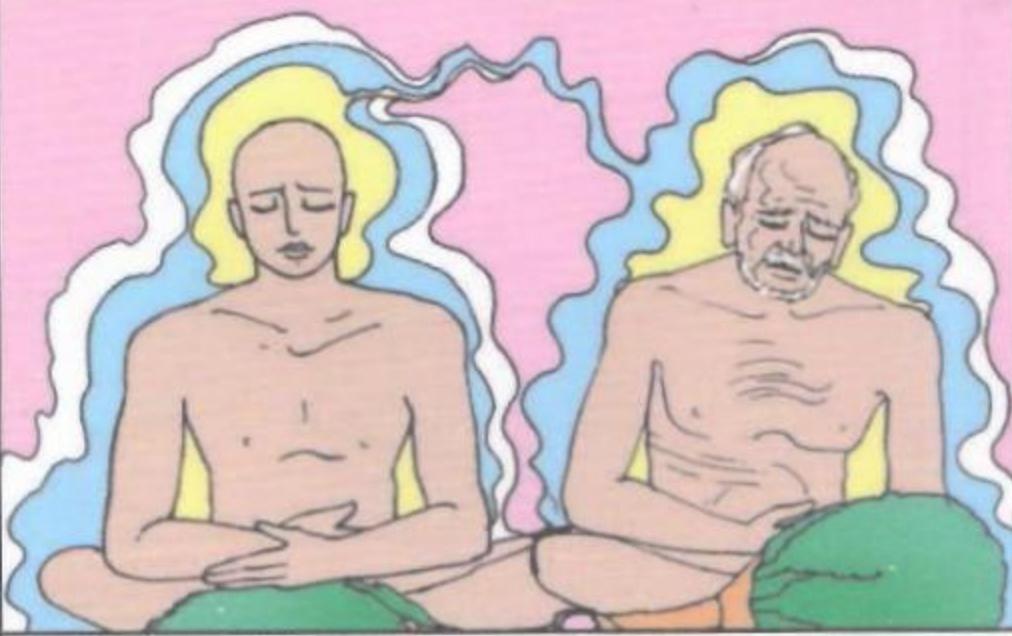
ब्रह्मचारी विद्याधर की मुनि दीक्षा के कुछ दिन उपरान्त श्री मल्लप्पा जी अष्टगे सपरिवार, मुनिश्री विद्यासागर जी के दर्शनार्थ अजमेर पहुँचे। साथ में विद्याधर का अंतरंग सखा मारुति भी था। मुनिश्री विद्यासागर के दर्शन करते ही सबकी आँखें उमड़ पड़ी, नेवं गंगा जमुना बन गए।



मिव्र मारुति ने भी चाँदी के पुष्प समर्पित करके अपने अनोखे सखा की पूजन की।



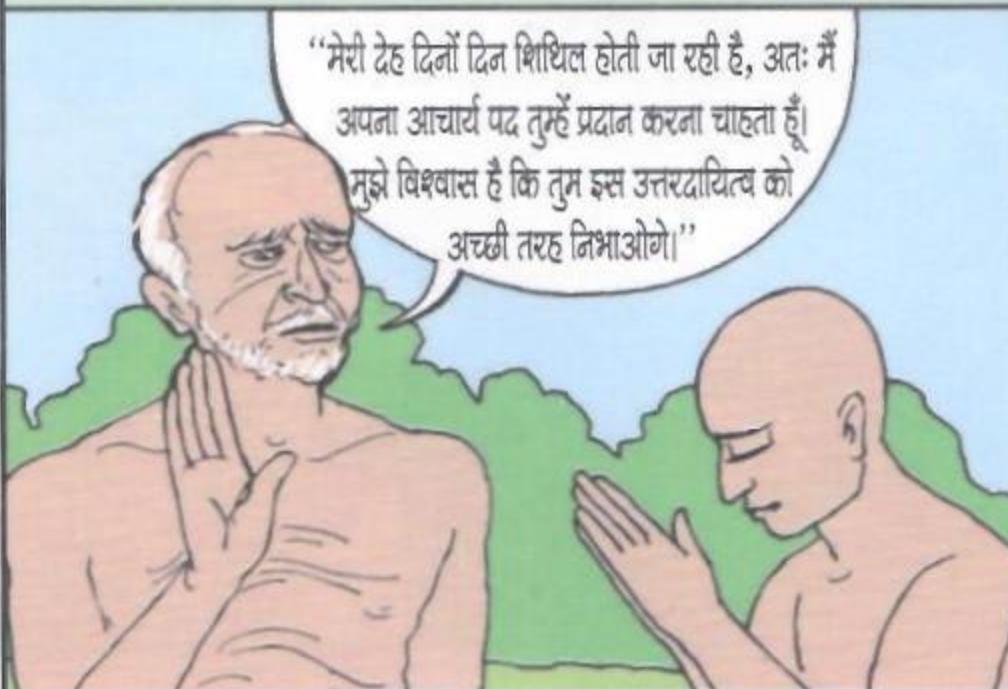
गुरुवर ज्ञानसागर जी निमित्त ज्ञानी थे, उन्हें ज्ञात था कि उनका यह अनोखा शिष्य श्रमण संस्कृति को आचार्य श्री कुंद-कुंद की भाँति रोशन करेगा। अतः वह पूर्ण तद्दयता से अपने शिष्य को बनाने सम्झालने व निखारने में जुट गये।



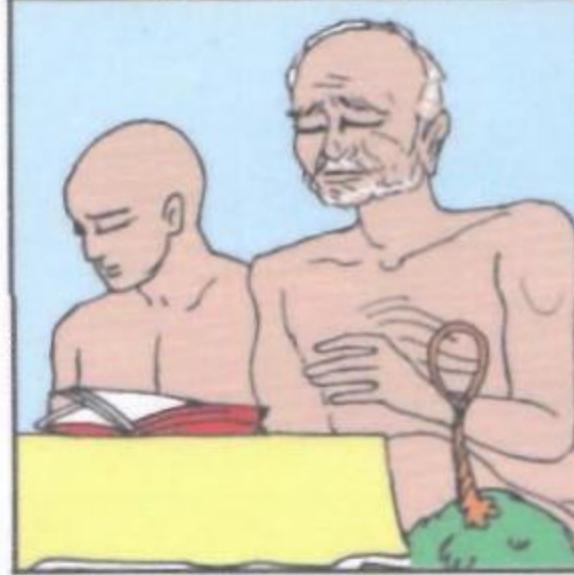
आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज की शिष्य मण्डली कुछ इस प्रकार थी-
मुनिश्री विद्यासागर जी, मुनिश्री विवेकसागर जी महाराज, ऐतक श्री सन्मति सागर जी, क्षुत्तक श्री स्वरूपानंद जी, श्री संभवसागर जी। अल्पवय में ही मुनिश्री विद्यासागर जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान बन चुके थे एवं संस्कृत में उन्होंने अपना लेखन कार्य भी प्रारम्भ कर दिया था।



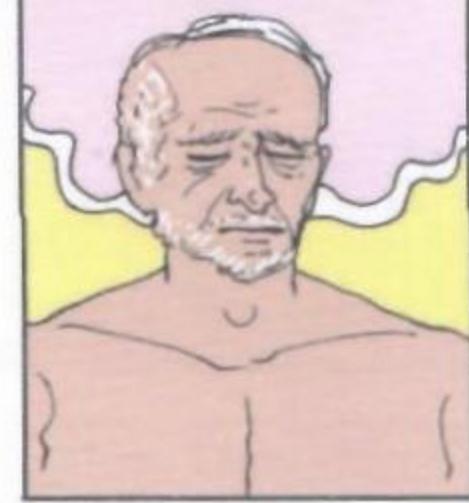
एक दिवस उन्होंने अपने भावों को मुनिश्री विद्यासागर जी के सम्मुख प्रकट किया और उन्हें आचार्यपद ग्रहण करने हेतु आज्ञा दी।



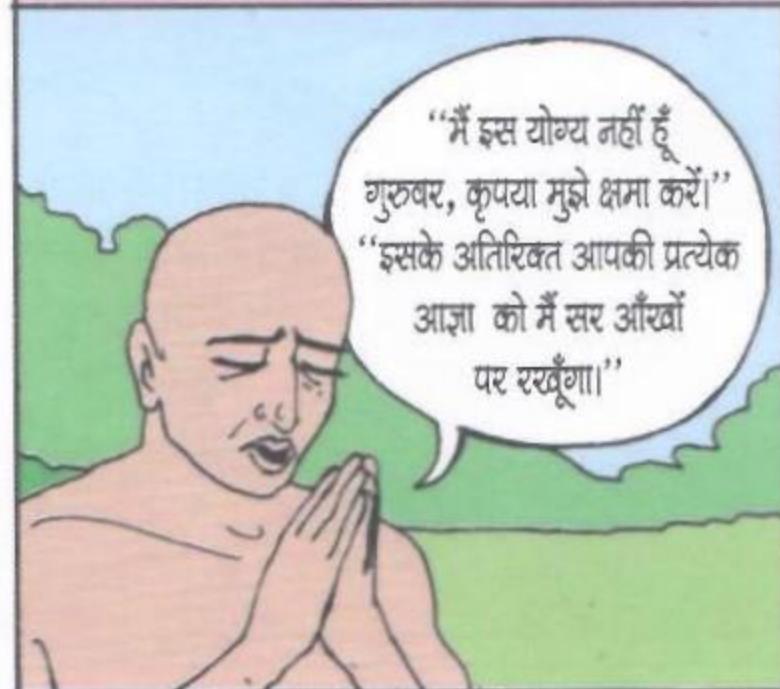
मुनिश्री विद्यासागरजी ने अपने गुरु के साथ 5 चातुर्मास व्यतीत किये- 1968 अजमेर, 1969 पुनः अजमेर, 1970 मदनगढ़ किशनगढ़, 1971 किशनगढ़ (अजमेर), 1972 नसीराबाद।



आचार्यश्री ज्ञानसागर जी की देह धीरे-धीरे शिथिल होने लगी थी। अतः उनके मानस में निरंतर आचार्यपद त्याग के भाव जन्म लेने लगे।



मुनिश्री विद्यासागर जी ने अल्पवय में इतने उच्च पद के उत्तरादायित्व को ग्रहण करने में स्वयं की असमर्थता प्रकट की तथा हाथ जोड़कर कहा -



गुरुवर ज्ञानसागर जी की घर्या ज्ञान अद्यात्म व साधना देखकर फाल्गुन कृष्ण पंचमी वि.सं. 2025 अर्थात् 7 फरवरी 1969 दिन शुक्रवार को नसीराबाद की जैन समाज ने उन्हें आचार्य पद प्रदान किया। “गुरुवर आचार्य ज्ञानसागर जी की जय हो।” के जयघोषों से भूमण्डल गूज उठा।

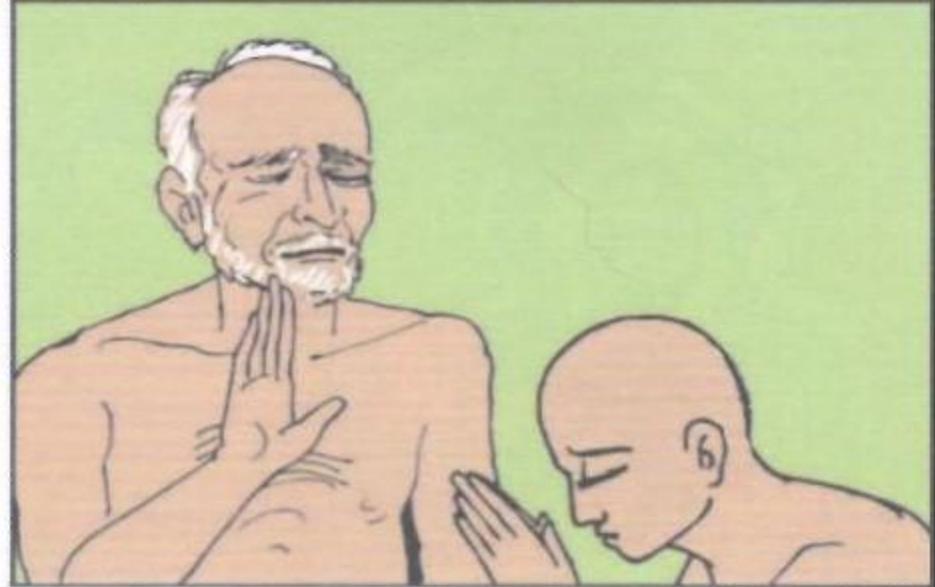


किंतु आचार्यश्री ज्ञानसागर जी ने गुरु दक्षिणा की बात सख्ती
और गुरु दक्षिणा में उन्होंने मुनिश्री विद्यासागर जी को आचार्य
पद ग्रहण करने का आदेश दिया।

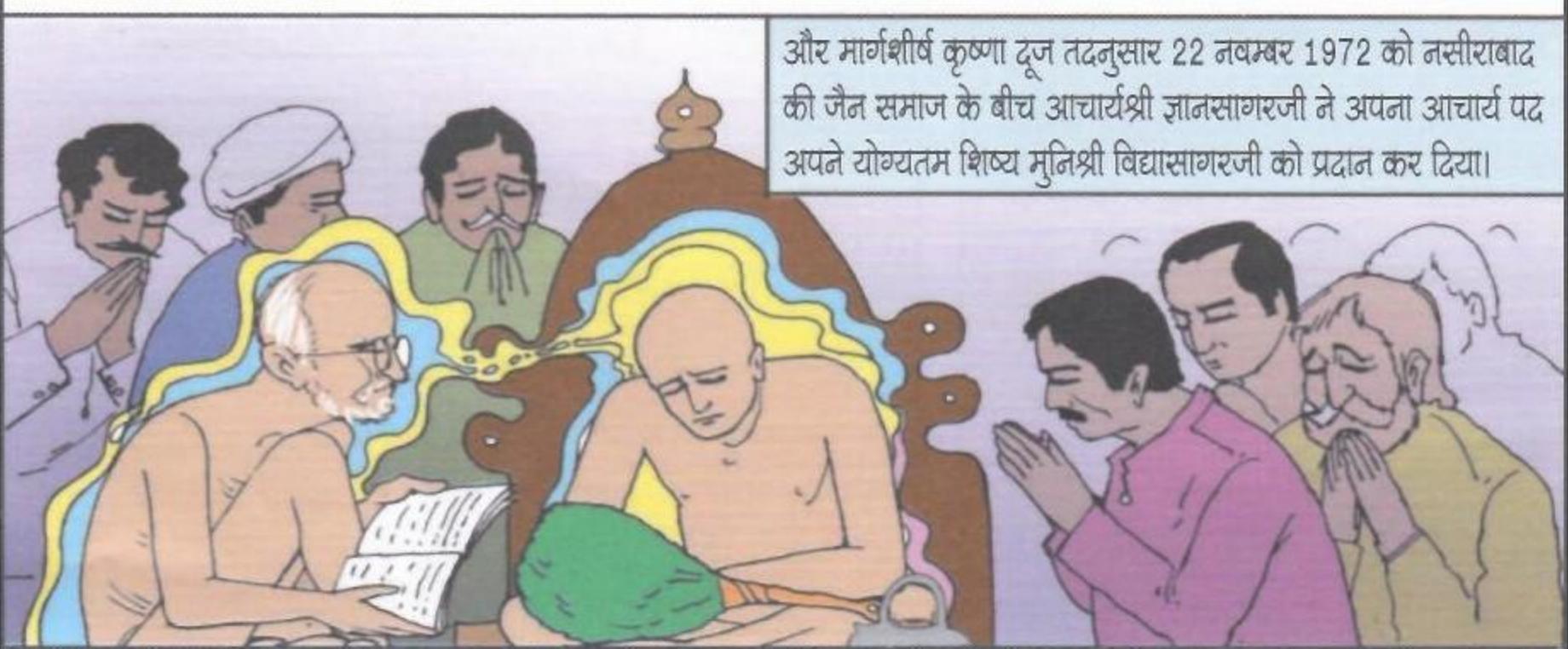
अब मुनिश्री विद्यासागर जी इस आदेश को कैसे टाल सकते थे।
एक सुयोग्य शिष्य को गुरु-दक्षिणा देनी ही होती है।



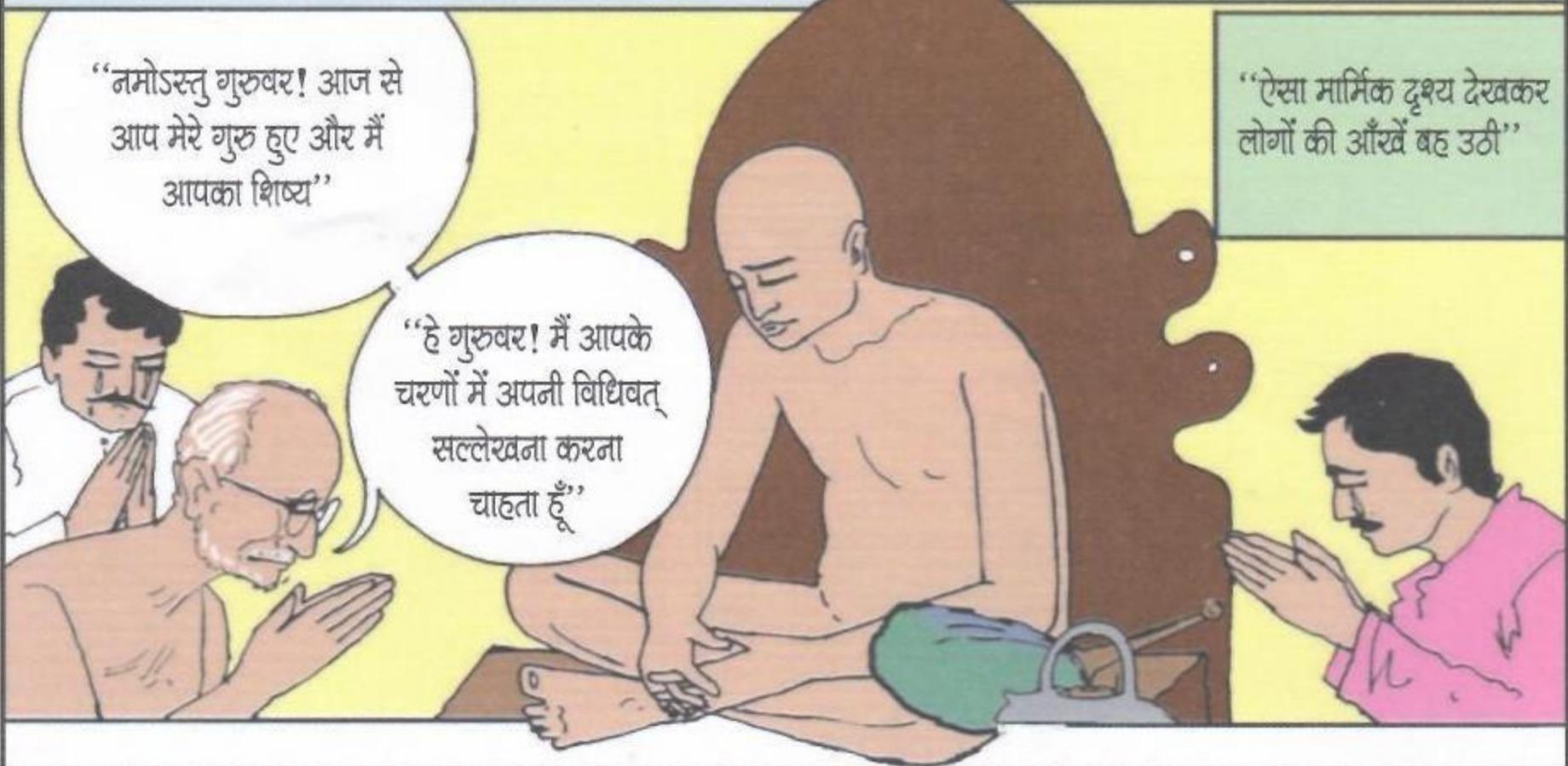
“मैं तुमसे गुरु दक्षिणा मांगता
हूँ और उस गुरु दक्षिणा में
तुम्हे इस पद को स्वीकारने
का आदेश देता हूँ”



और मार्गशीर्ष कृष्ण दूज तदनुसार 22 नवम्बर 1972 को नसीराबाद
की जैन समाज के बीच आचार्यश्री ज्ञानसागरजी ने अपना आचार्य पद
अपने योग्यतम शिष्य मुनिश्री विद्यासागरजी को प्रदान कर दिया।



तथा उनके चरणों में अपनी सल्लेखना की भावना व्यक्त की -

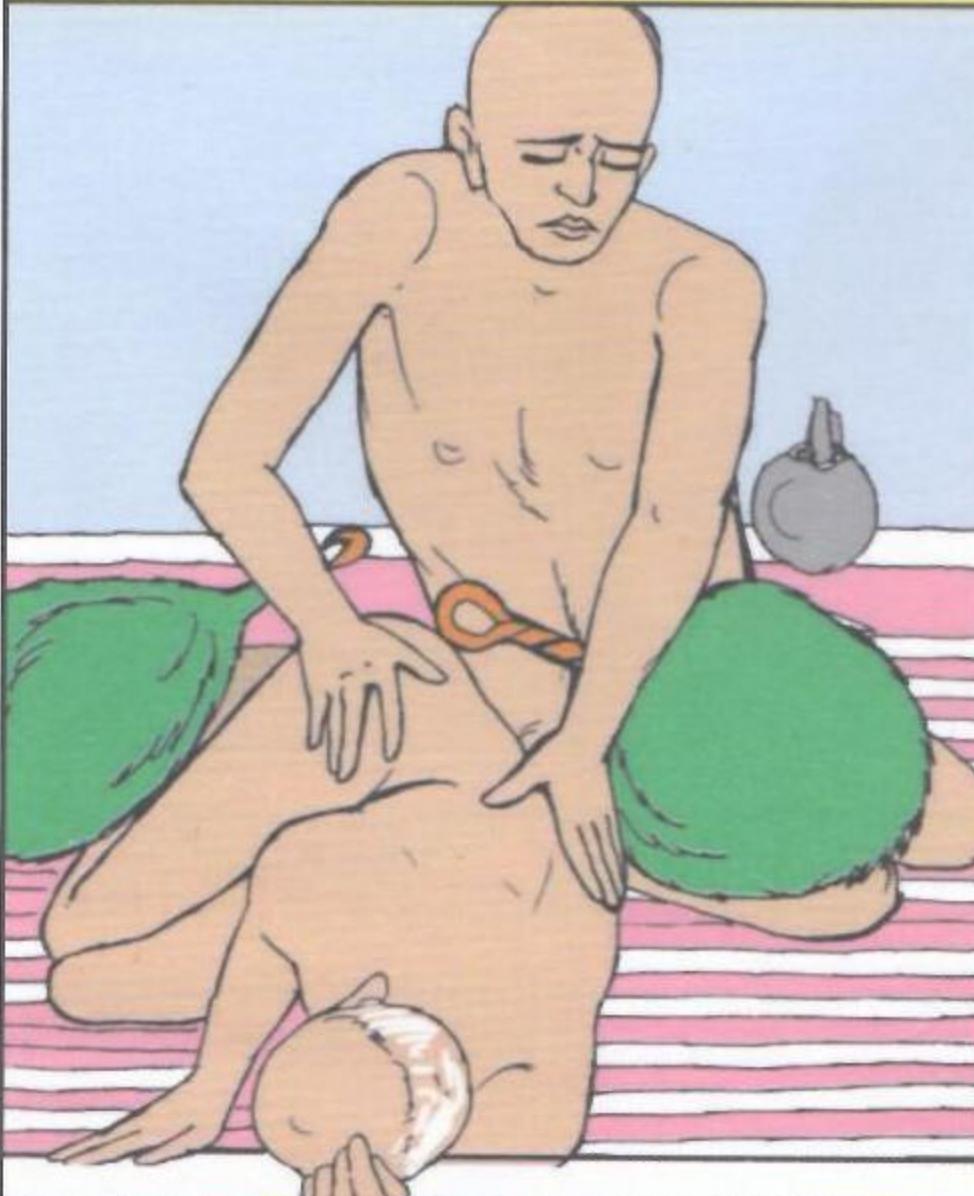


“नमोऽस्तु गुरुवर! आज से
आप मेरे गुरु हुए और मैं
आपका शिष्य”

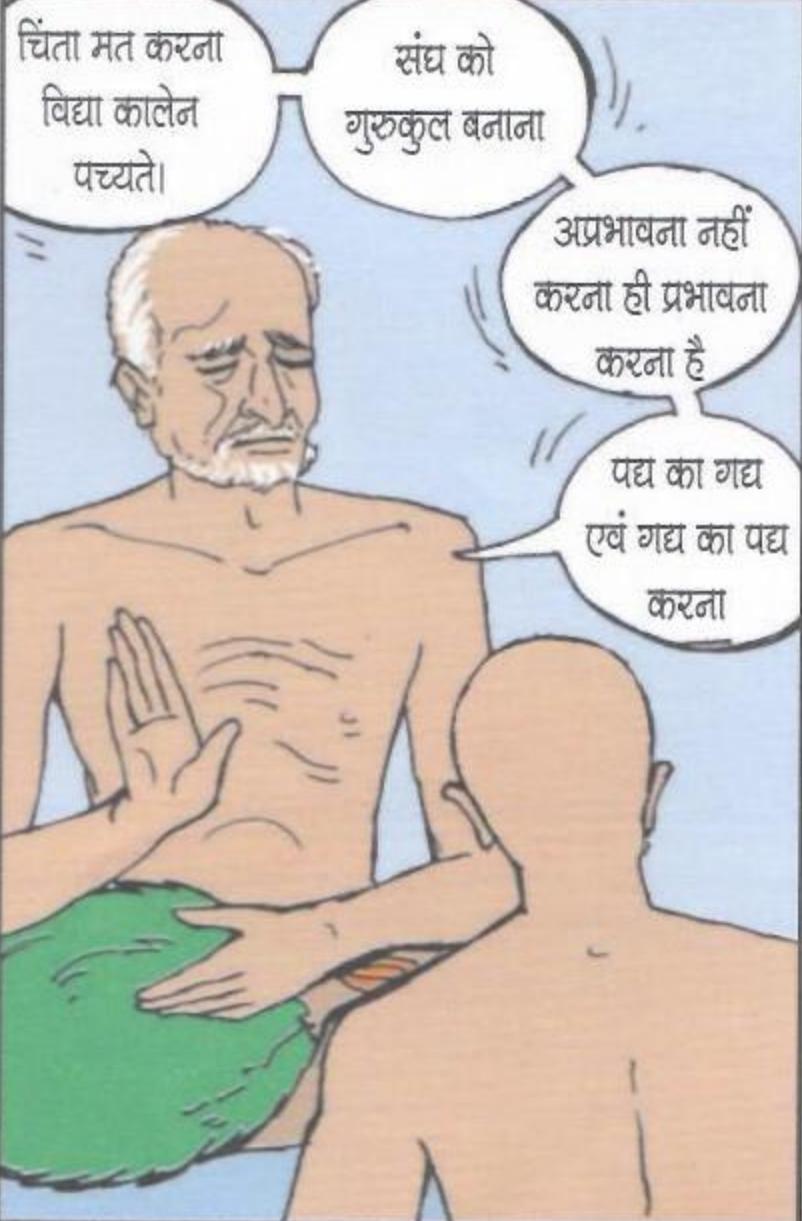
“हे गुरुवर! मैं आपके
चरणों में अपनी विधिवत्
सल्लेखना करना
चाहता हूँ”

“ऐसा मार्मिक दृश्य देखकर
लोगों की आँखें बह उठी”

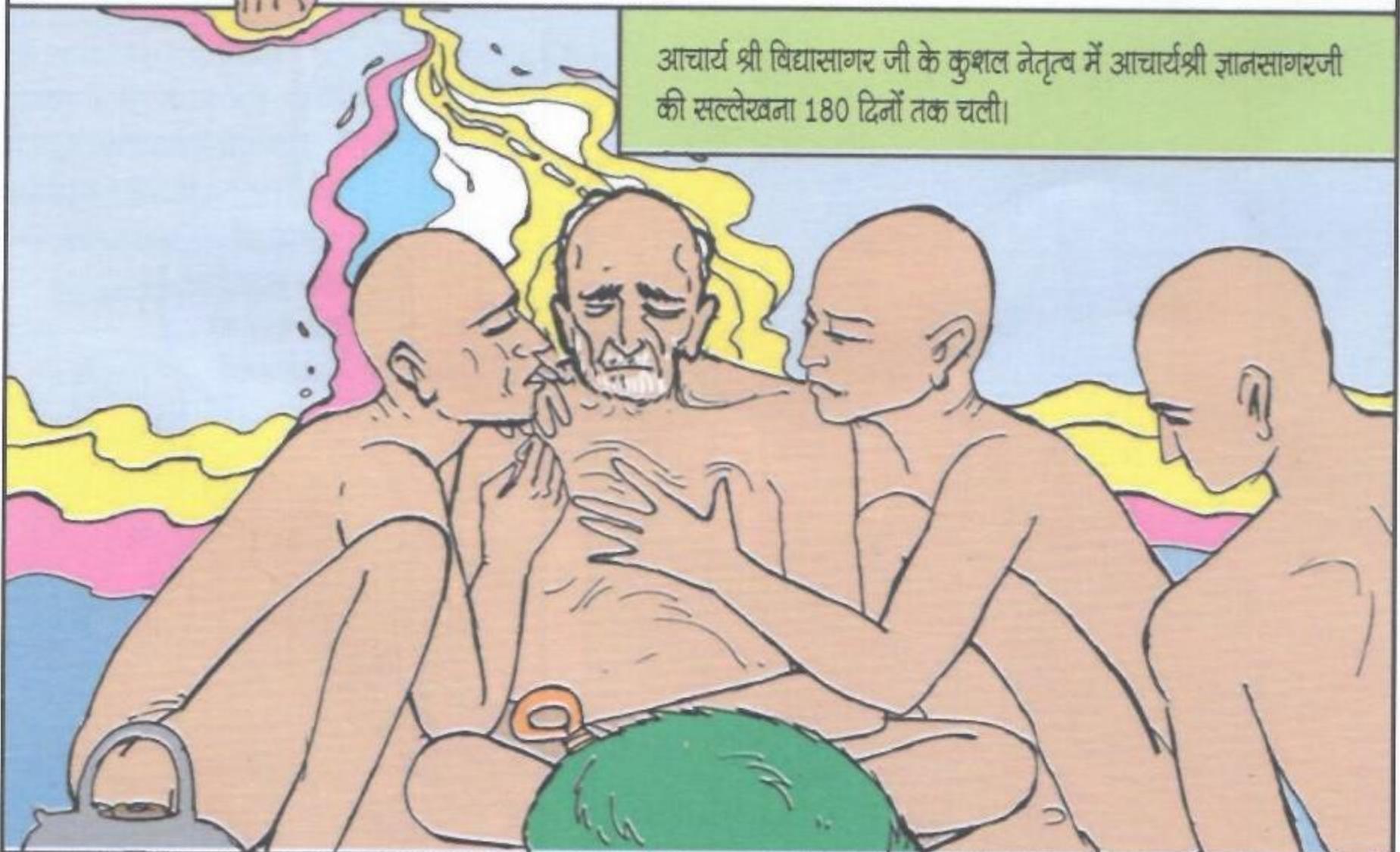
आचार्य श्री विद्यासागरजी ने अपने गुरु ज्ञानसागरजी की जो सेवा की उसे शब्दों में निबद्ध करना शक्य नहीं है। युग उनकी सेवा के लिए सदा नतमस्तक रहेगा।



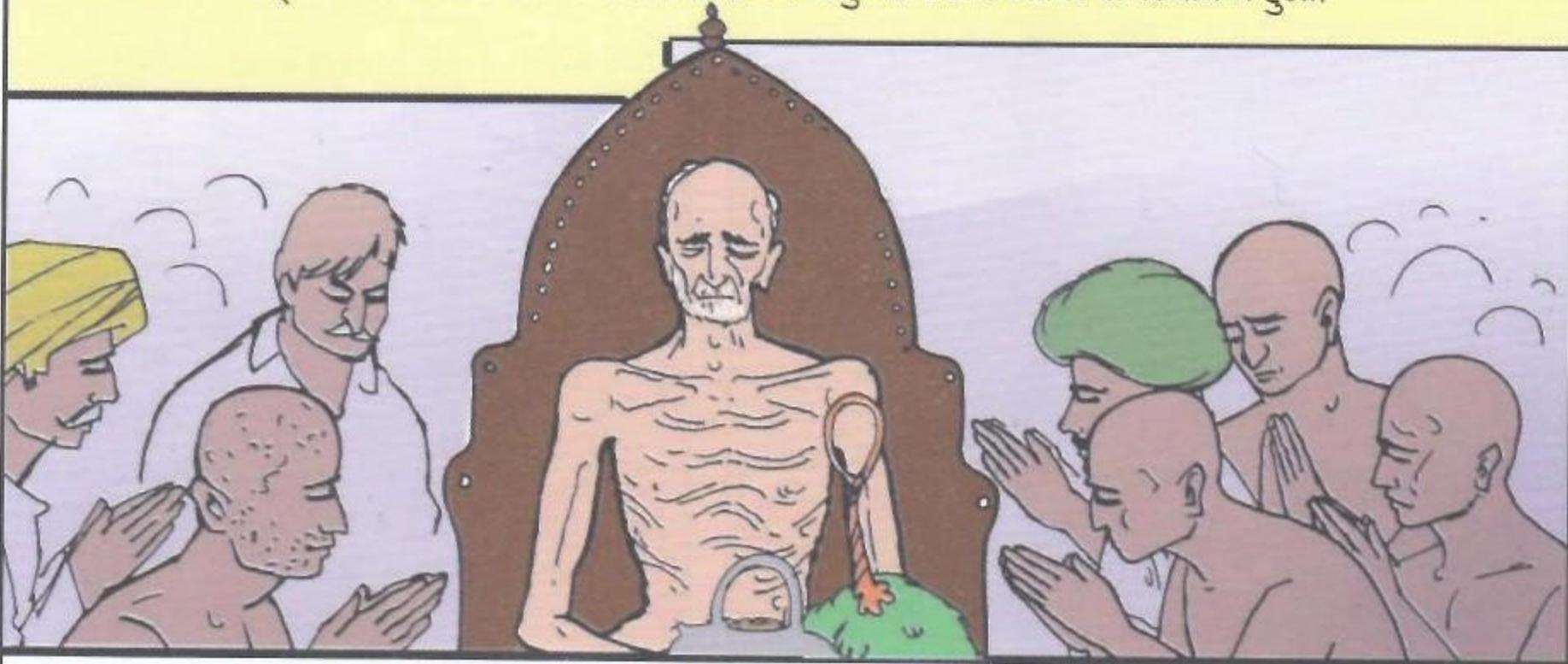
सल्लेखना के चलते गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी ने आचार्यश्री विद्यासागर जी को निम्न सूत्र प्रदान किये -



आचार्य श्री विद्यासागर जी के कुशल नेतृत्व में आचार्यश्री ज्ञानसागरजी की सल्लेखना 180 दिनों तक चली।



6 माह तक अज्ञ का त्याग रहा और ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या बि.सं. 2030 तदनुसार 1 जून 1973 को प्रातः 10 बजकर 50 मिनट पर नमः सिद्धेभ्यः के मंत्रोच्चार के साथ आचार्यश्री ज्ञानसागर जी ने पार्थिव देह का परित्याग कर दिया। आचार्य पदारोहण के पश्चात् आचार्यश्री विद्यासागरजी ससंघ का प्रथम चातुर्मास 1973 ब्यावर राजस्थान में हुआ।



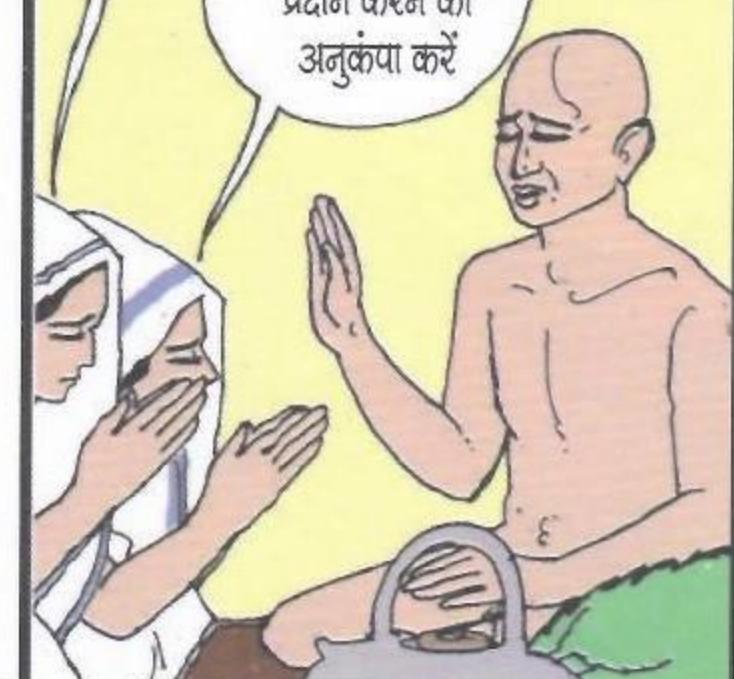
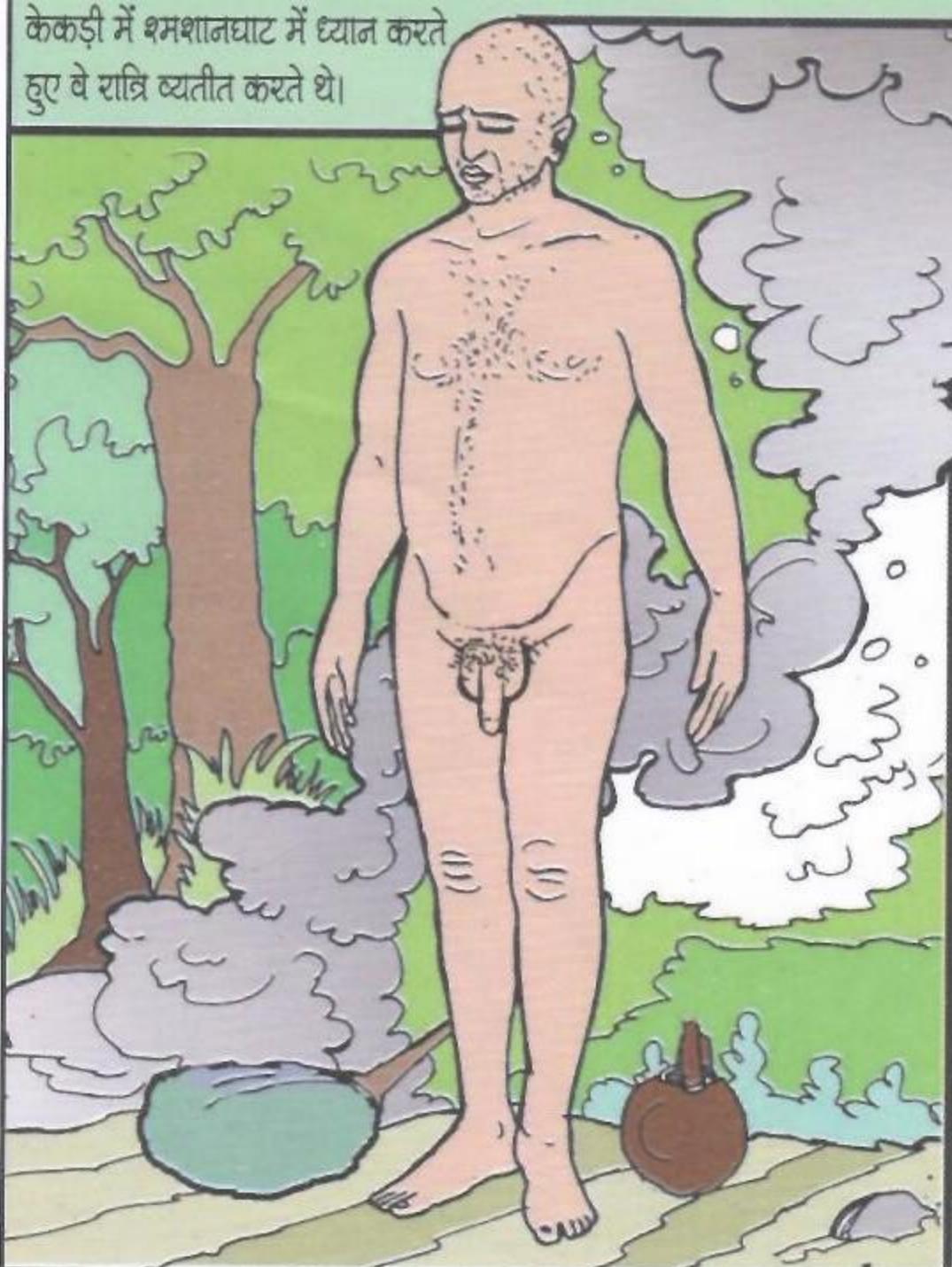
1974 अजमेर राजस्थान वर्षायोग के दौरान आचार्यप्रबर ने 36 घंटे का ध्यान किया।
केकड़ी में श्मशानघाट में ध्यान करते
हुए वे शत्रि व्यतीत करते थे।

1975 सवाईमाधोपur में आहार के उपरांत
शांता सुवर्णा ने गुरुवर से आजीवन ब्रह्मचर्य
ब्रत ग्रहण कर लिया।

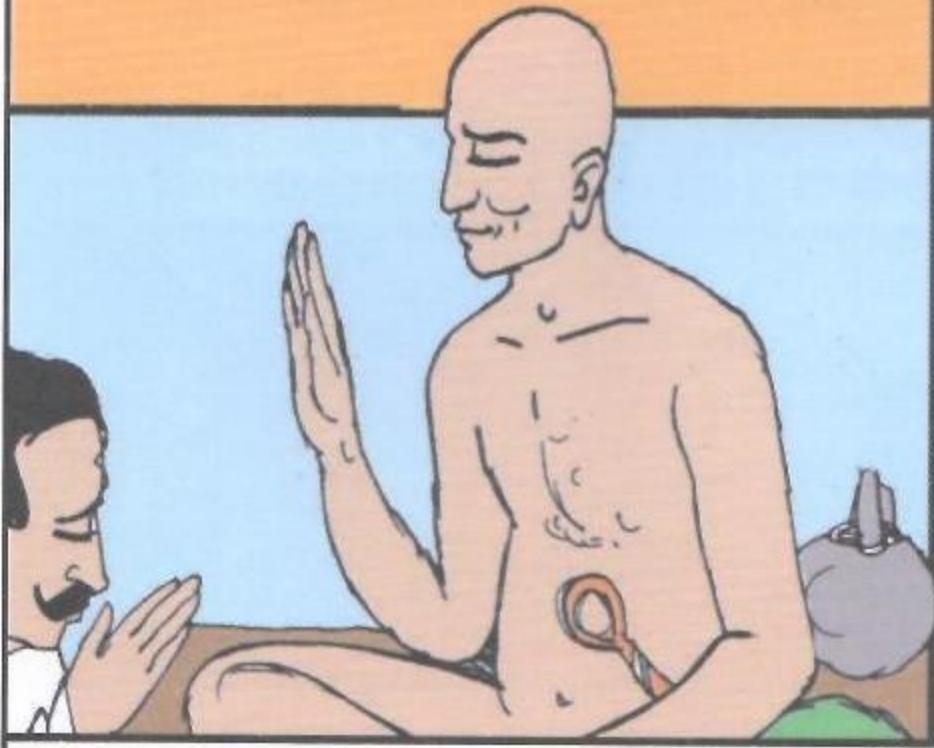
हम अपने आत्म
कल्याण के लिए आपसे
आजीवन ब्रह्मचर्य ब्रत
ग्रहण करना
चाहते हैं।

धर्मवृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु के
आशीर्वाद के साथ ही गुरुवर
ने उन्हें आजीवन ब्रह्मचर्य
ब्रत प्रदान कर दिया।

कृपया हमें
आजीवन ब्रह्मचर्य ब्रत
प्रदान करने की
अनुकंपा करें



आचार्यप्रबर ने अपनी साधना काल में ब्रह्मचारी अवस्था में 1967 में मीठे का त्याग कर दिया था।



परिवार के सभी बड़ों के इस वैराग्य से, परदेश में अकेले बचे लघुद्वय भ्राता अनंतनाथ, शांतिनाथ, जो कि अल्प उम्रधारी थे घबरा गए, तब आचार्यप्रबर ने उन्हें संबोधा -



महावीर जी क्षेत्र पहुँचकर गुरुवर के आदेश से श्री मल्लप्पा जी एवं श्रीमंती मोक्षमार्ग की साधना हेतु आचार्यश्री धर्मसागरजी के संघ में प्रविष्ट हुईं।



यह संबोधन सुनकर 2 मई 1975 महावीरजी क्षेत्र में आचार्यप्रबर से अनंतनाथ एवं शांतिनाथ ने आजीवन ब्रह्मचर्य ब्रत ग्रहण कर लिया।

“हमें आजीवन ब्रह्मचर्य
ब्रत प्रदान कर कृतार्थ
करें गुरुवर।”



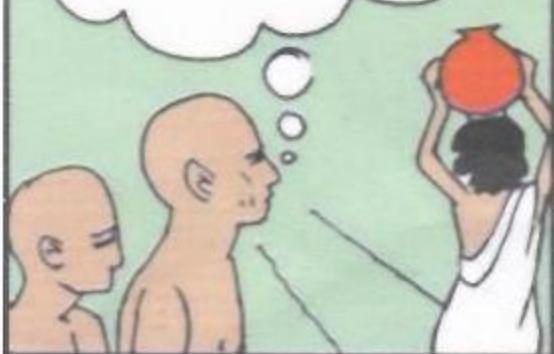
इस तरह जग्मूखामी की भाँति संपूर्ण अष्टगे परिवार, मात्र अंग्रज भ्राता महावीर को छोड़कर मोक्ष पथ पर आरूढ़ हो गया। मुजफ्फरनगर उ.प्र. में 5 फरवरी 1976 को आचार्यश्री धर्मसागरजी ने 13 दीक्षाएँ प्रदान की। जिसके दो सदस्य सदूलगा अष्टगे परिवार से थे। मल्लप्पाजी बने मुनि 108 मल्लसागरजी, श्रीमंती हुई, आर्यिका समयमतिजी।



आचार्यप्रबर के द्वारा बुद्धेत्खण्ड भूमि को अपनी साधना स्थली एवं धर्मप्रभावना केन्द्र बनाने के पीछे एक सशक्त व सात्विक कारण हैं। सोनागिर में क्षुल्लक दीक्षा प्रदान करने के उपरांत जब आचार्यप्रबर अपने लघु संघ के साथ ललितपुर के निकट पहुँचे वहाँ एक दिन उनकी दृष्टि मंदिर प्रांगण पर कुरे से जल खींचते बालक पर पड़ी उन्होंने देखा कि - उसने पहले नीचे धरती पर एक परात रखी, उसके ऊपर जलपात्र रखा फिर उस पर स्वच्छ और मोटा छन्ना रखा। तदुपरांत साधानी पूर्वक पानी खींचा उसे छाना और जो अनछना जल परात में छलक कर गिरा था उसे भी विवेक पूर्वक छानकर जीवाणी को बापस कुरे में पहुँचाया। यह दृष्टि देखकर आचार्यप्रबर अत्यंत प्रसन्न हुए। प्रमुदित स्वरों में उन्होंने श्रावकों से पूछा - यह कौन सा स्थान है ? उत्तर मिला तालबेहट

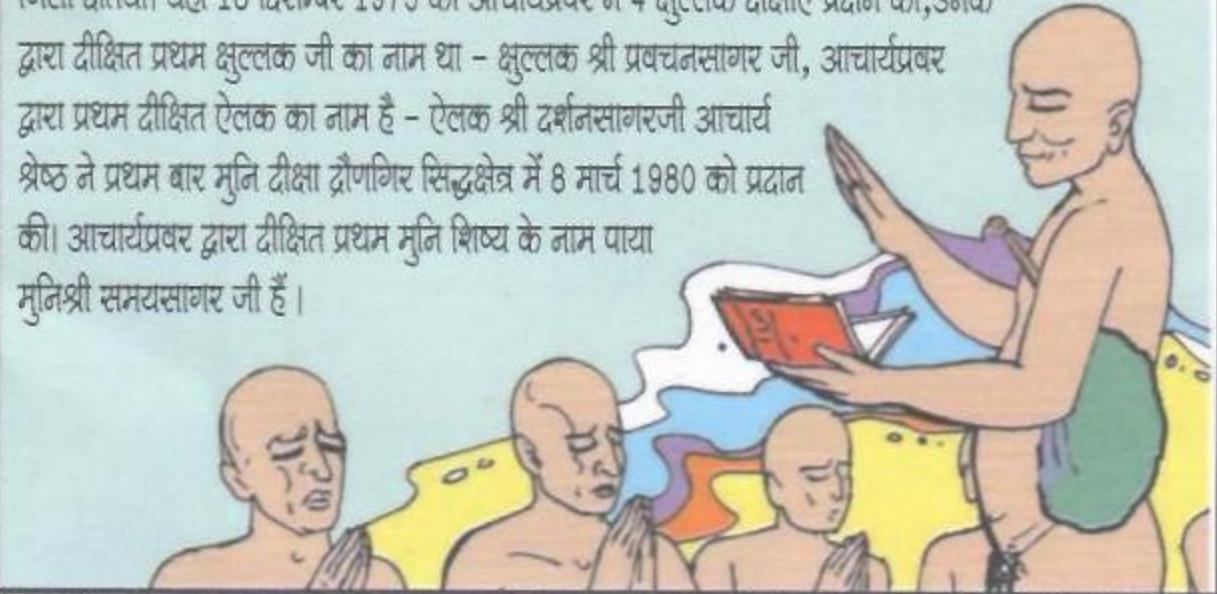


जब यहाँ का बालक इतना विवेकशील है तो यहाँ के श्रावक कितने विवेकशील न होंगे?



और इस तरह उस बालक के विवेक ने इस सदी के महान आचार्य को बुद्धेत्खण्ड क्षेत्र को साधनास्थली बनाने हेतु प्रेरित किया

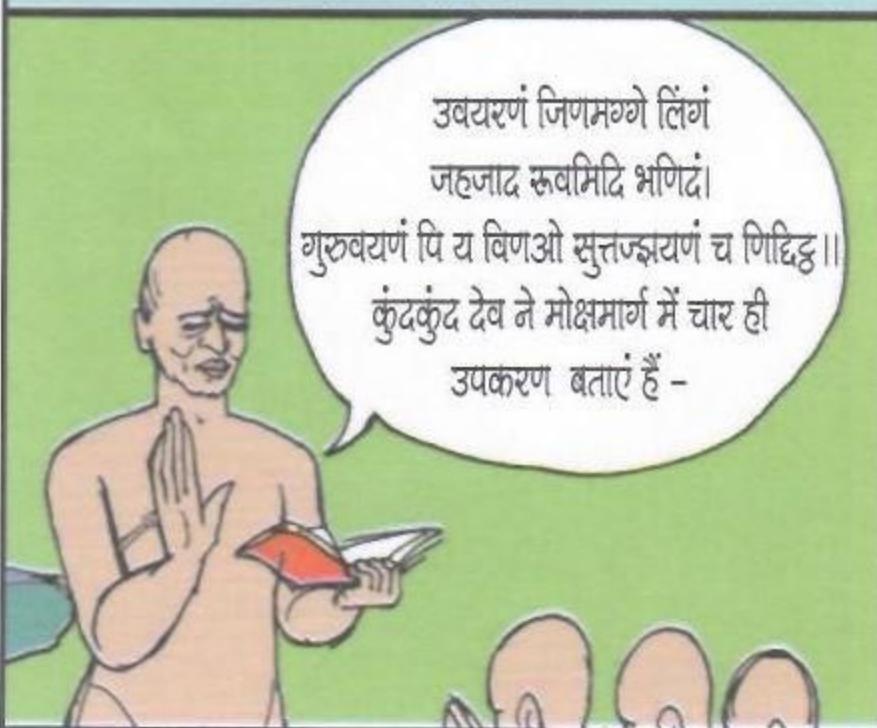
आचार्यप्रबर ने अपने कर कमलों से जहाँ सर्वप्रथम दीक्षा प्रदान की वह थी स्थान का नाम सोनागिर सिद्धक्षेत्र जिला दिल्ली। यहाँ 18 दिसम्बर 1975 को आचार्यप्रबर ने 4 क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की, उनके द्वारा दीक्षित प्रथम क्षुल्लक जी का नाम था - क्षुल्लक श्री प्रबचनसागर जी, आचार्यप्रबर द्वारा प्रथम दीक्षित ऐलक का नाम है - ऐलक श्री दर्शनसागरजी आचार्य श्रेष्ठ ने प्रथम बार मुनि दीक्षा द्वैषंगिर सिद्धक्षेत्र में 8 मार्च 1980 को प्रदान की। आचार्यप्रबर द्वारा दीक्षित प्रथम मुनि शिष्य के नाम पाया मुनिश्री समयसागर जी हैं।



दीक्षा के उपरांत आचार्यप्रबर नवदीक्षित शिष्यों को साधना हेतु आचार्यश्री कुन्दकुन्द देव विशेषित प्रबचनसार चरणानुयोग चूलिका की 225 नं. की गाथा प्रदान करते हैं -

उवयरणं जिणमङ्गे लिंगं
जहुजाद रुवमिदि भणिदं।

गुरुवयणं पि य विणओ सुत्तज्जयणं च णिद्धिः॥
कुंदकुंद देव ने मोक्षमार्ग में चार ही
उपकरण बताए हैं -



“1. यथाजात रूप, 2. गुरु के वचन, 3. गुरु की विनय,
4. सूत्र का अध्ययन।” “प्रारंभ के दो उपकरण तो मैंने आप लोगों को प्रदान कर दिए शेष दो उपकरणों की प्राप्ति आप पर निर्भर करती है।” और सुनिए गुरु दीक्षा दे सकते हैं, गुणस्थान नहीं। अपने योग्य गुणस्थानों को बनाए रखना आपका कार्य है।”

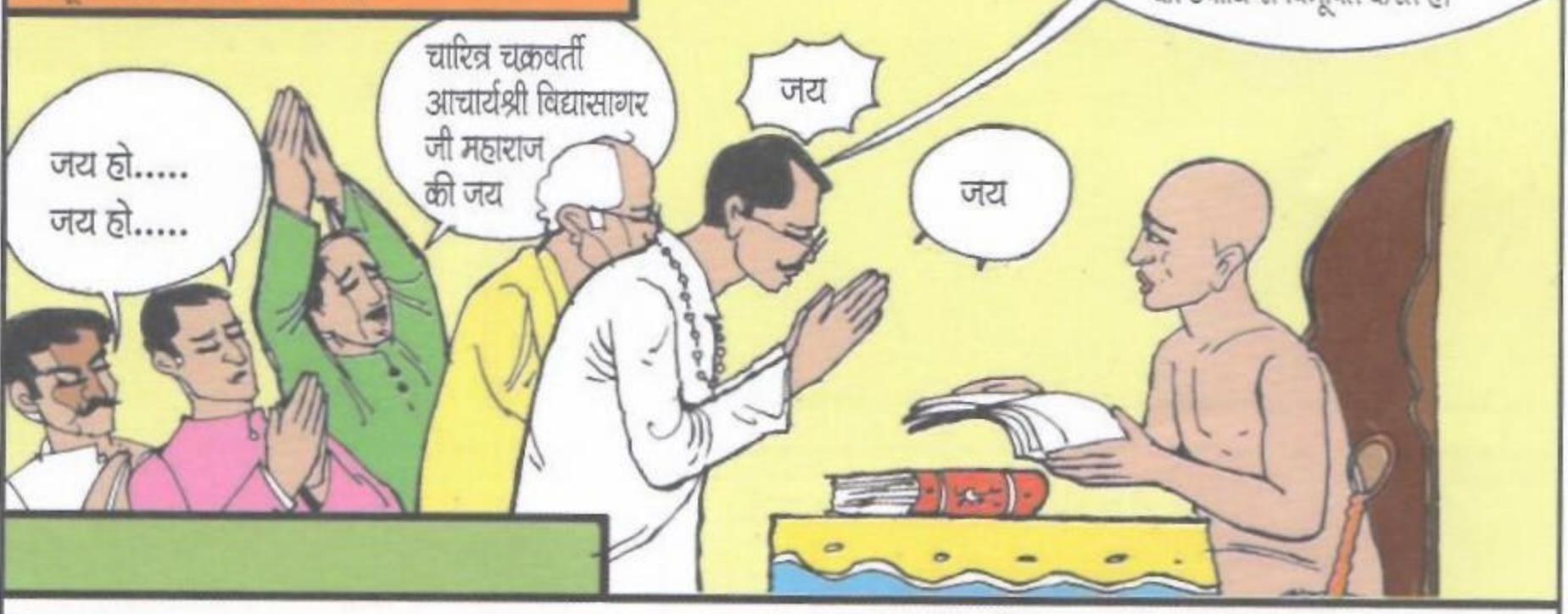


आचार्यप्रबर के बुंदेलखण्ड में प्रवेश करते ही बाल, युवा, त्यागी-तपस्थियों की संख्या दिन-दूनी-रात-चौगुनी होने लगी, गृह-त्यागी बालकों एवं युवाओं को तो उन्होंने अपने संघ में प्रवेश दे दिया, किन्तु बालिकाओं एवं युवतियों को उन्होंने अपने साथ रखने से इंकार कर दिया। अतः पूज्य आचार्यप्रबर के आशीर्वाद से उन गृहत्यागी बहनों की प्रथम साधना, स्थली की स्थापना 16/11/1979 कुण्डलपुर, द्वितीय साधना स्थली की स्थापना मार्च 1980 सागर मोराजी, तृतीय साधना स्थली की स्थापना 28/11/1984 को जबलपुर मदिया जी में ब्राह्मी विद्या आश्रम के नाम से ठुड़ी। आचार्य प्रबर ने इन बहनों को वैराग्य व अध्यात्मय जीवन जीने की शिक्षा प्रदत्त करते हुए कहा - आप लोगों को अपना जीवन संबंध से मुक्त रखना है। शान्त धीर और गंभीर बनना है। आचार्य श्री जी के प्रति लोगों की श्रद्धा दिन पर दिन बढ़ती ही चली जा रही थी.....



आचार्यश्रेष्ठ की निर्दोष अनुशासित एवं कठोर चर्चा देखकर अप्रैल 1980 सागर मध्यप्रदेश में, बटखण्डाम की वाचना के दौरान विद्वानों एवं समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के द्वारा आचार्यप्रबर को चारित्र चक्रवर्ती की उपाधि से विभूषित करने की भावना व्यक्त की गई।

वर्तमान में आचार्यश्री विद्यासागरजी ज्ञान चारित्र की दुर्लभ विभूति हैं, अतः हम उन्हें, चारित्र चक्रवर्ती की उपाधि से विभूषित करते हैं।

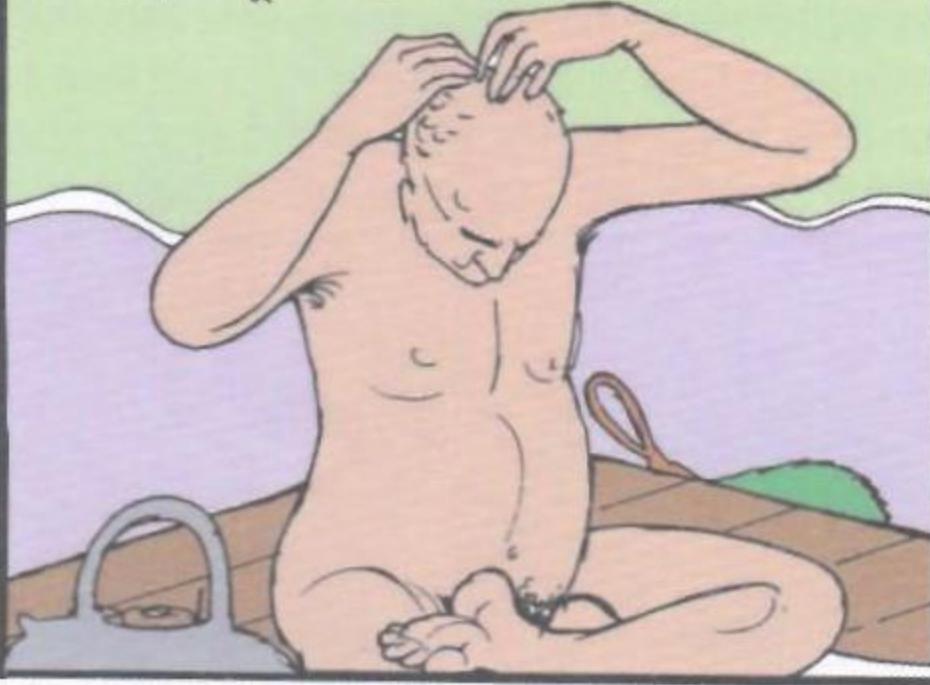


आचार्यप्रबर ने सबको शांत रहने का कठोर आदेश दिया तथा इस उपाधि को ग्रहण करने से स्पष्ट इंकार कर दिया, गंभीर शब्दों में बोले-

“मैं तो आप महानुभावों को बहुत विद्वान् समझता था किन्तु मेरे अभिप्राय को जाने बिना, मुझसे अनुमति प्राप्त किए बिना अभी आपने जो घोषणा की वह आपके विवेक की परिचायक नहीं है।”



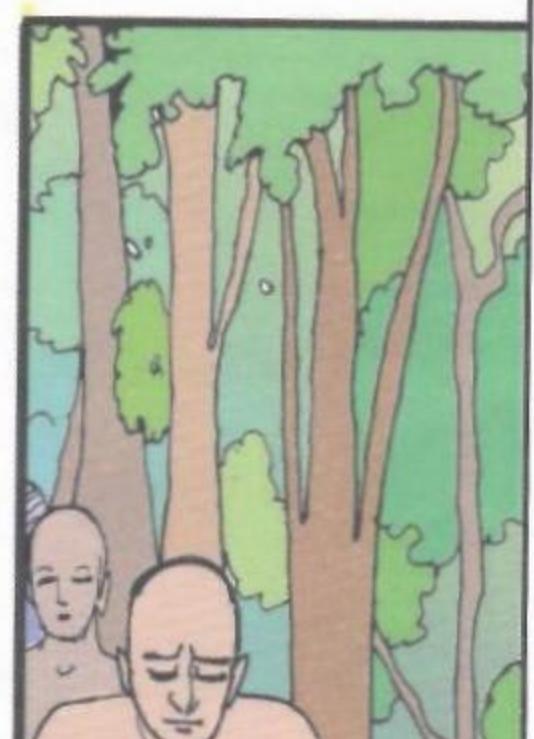
1980 मुक्तागिर चातुर्मास से आचार्यप्रबर ने 2 माह में केशलोंच प्रारंभ कर दिए। इसके पूर्व वे 3 माह में केशलोंच करते थे।



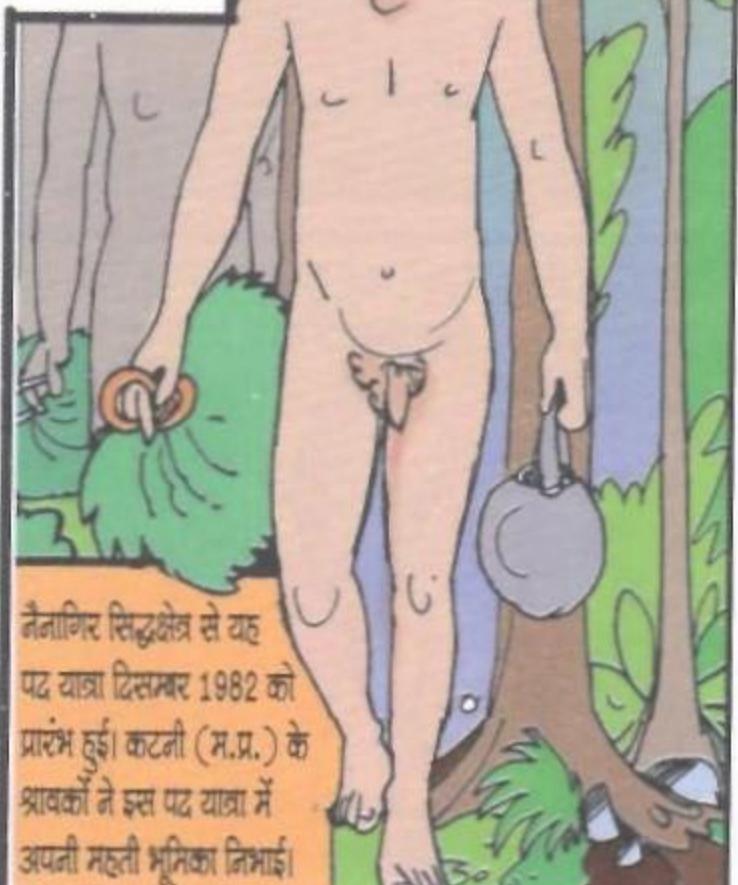
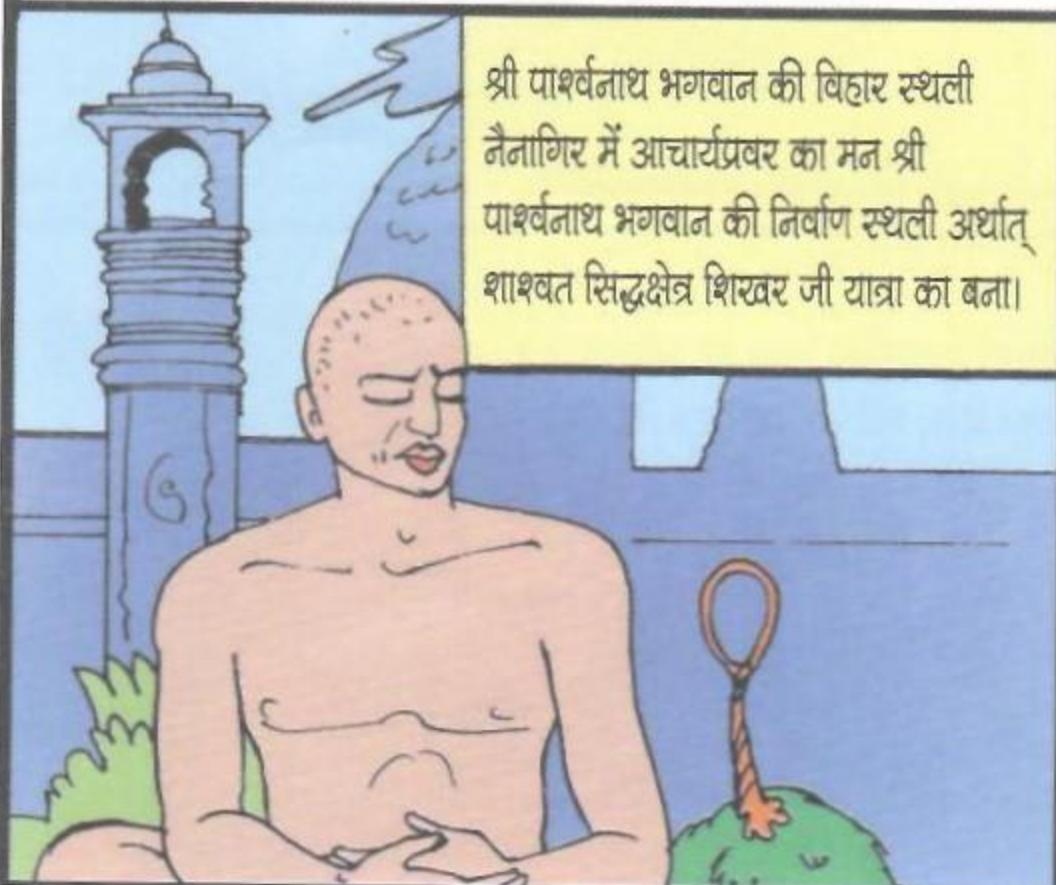
1980 घनसौर (म.प्र.) में एक श्रावक के यहाँ आचार्यप्रबर का आहार हुआ, उसके यहाँ के कुएँ का जल 30 मार्च की शाम तक खारा था, पीने योग्य नहीं था आचार्यप्रबर के आहार के उपरांत दूसरे दिन ही अर्थात् 31 मार्च की सुबह उस कुएँ का जल मीठा हो गया।

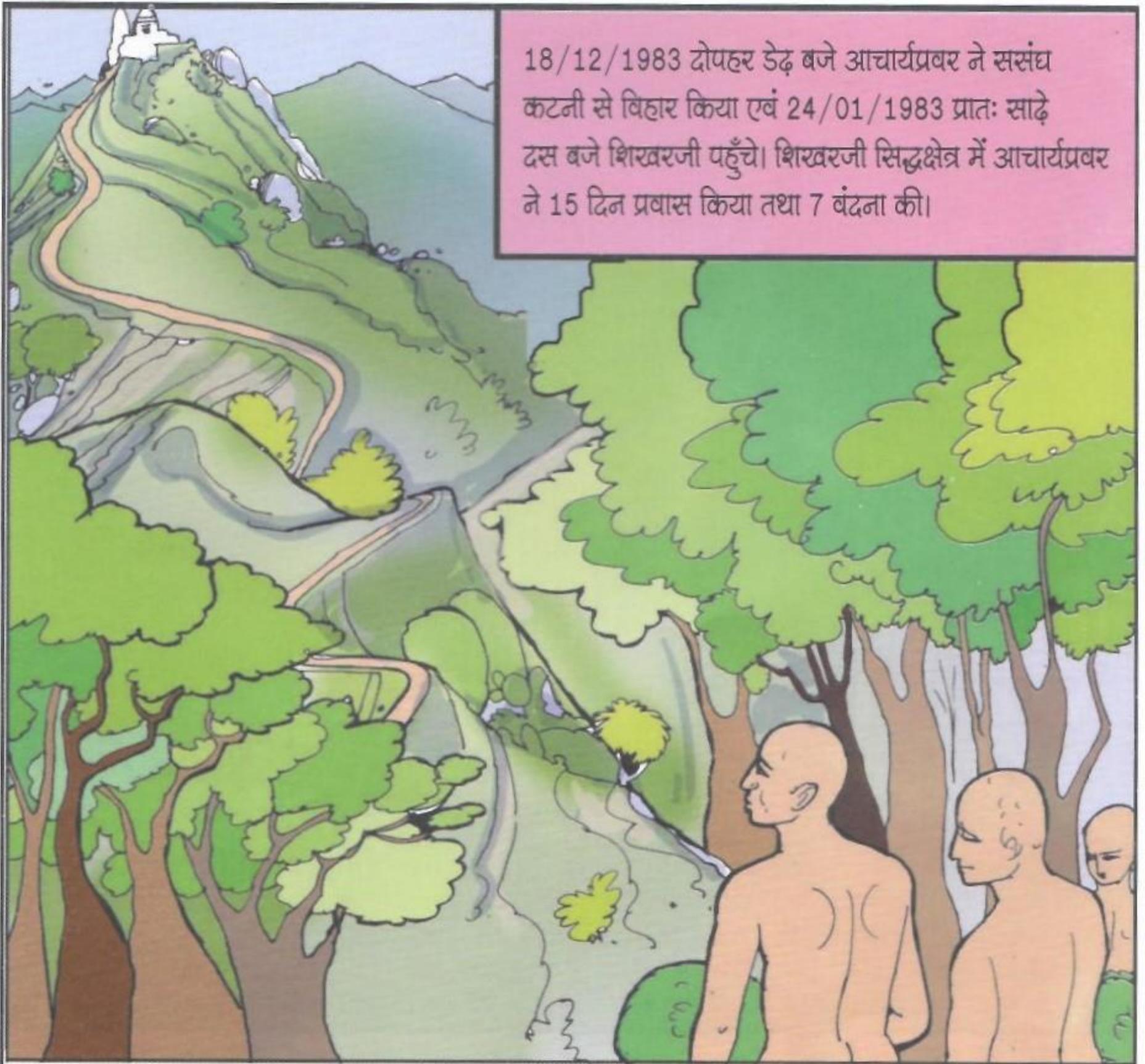


नैनागिर सिद्धक्षेत्र 1981-1982 चातुर्मास के दौरान बहाँ के जंगलों में जो डाकू, लोगों को लूटते थे, उन्हीं डाकूओं ने नैनागिर सिद्धक्षेत्र में आचार्यप्रबर के चरणों में आत्म समर्पण करके लोगों को नैनागिर सिद्धक्षेत्र कुशलता पूर्वक पहुँचाने का वचन दिया।



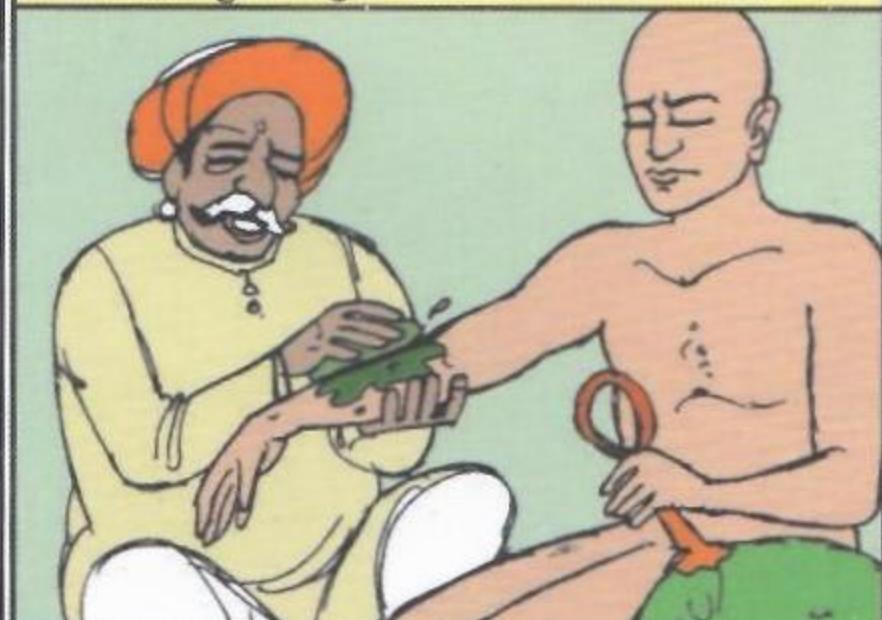
श्री पार्श्वनाथ भगवान की विहार स्थली नैनागिर में आचार्यप्रबर का मन श्री पार्श्वनाथ भगवान की निर्वाण स्थली अर्थात् शाश्वत सिद्धक्षेत्र शिखर जी यात्रा का बना।





18/12/1983 दोपहर डेढ बजे आचार्यप्रबर ने ससंघ कटनी से विहार किया एवं 24/01/1983 प्रातः साढ़े दस बजे शिखरजी पहुँचे। शिखरजी सिद्धक्षेत्र में आचार्यप्रबर ने 15 दिन प्रवास किया तथा 7 बंदना की।

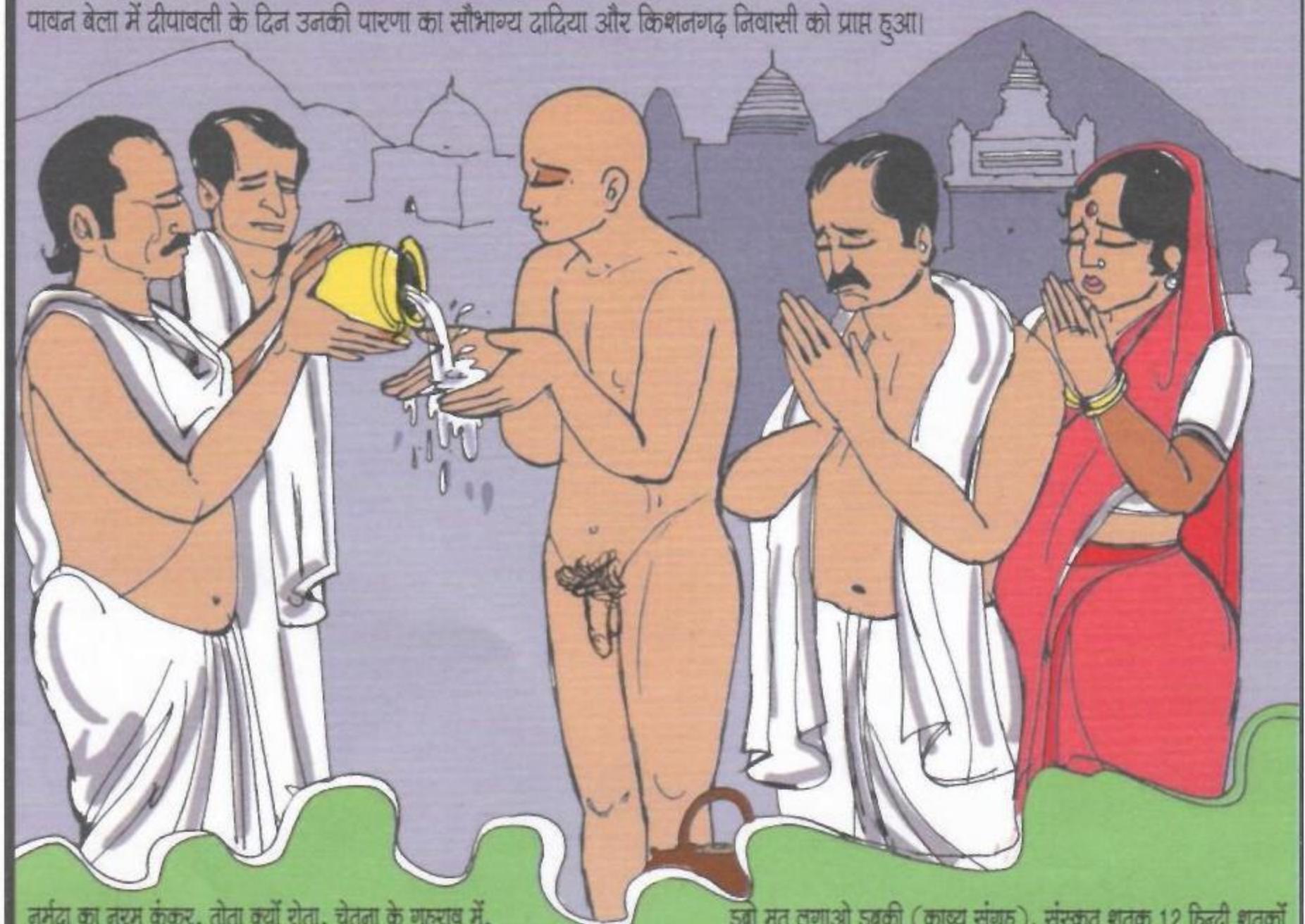
आचार्यप्रबर के ऊपर सन् 1977 वर्षायोग कुण्डलपुर में आंखों में चंदन का तेल जाने का उपसर्ग हुआ। जनवरी 1984 में आचार्यप्रबर के दाहिने हाथ में फेकचर हुआ किन्तु उन्होंने प्लास्टर नहीं चढ़वाया।



एक दिवस श्रावकों ने उनके हृथ पर हल्दी चूड़े का लेप किया। आचार्यप्रबर सामायिक में बैठ गए (दोपहर) एक अन्य श्रावक ने सामायिक में ही उनके हृथ पर इलेक्ट्रिक सिकाई कर दी। आचार्यप्रबर का पूरा हृथ जल गया। घमड़ी उथड़ गई पर आचार्यप्रबर उस उपसर्ग के मध्य भी अपनी सामायिक में सुमेरुवत् समान अकंप रहे।



सिद्धक्षेत्र मुक्तागिर में बर्षायोग 1990 के दौरान 9 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक आचार्यप्रबर ने लगातार 9 उपवास किये। चातुर्मास निष्ठापन की पावन बेला में दीपावली के दिन उनकी पारणा का सौभाग्य दादिया और किशनगढ़ निवासी को प्राप्त हुआ।



नर्मदा का नरम कंकर, तोता क्यों रोता, चेतना के गहराब में,

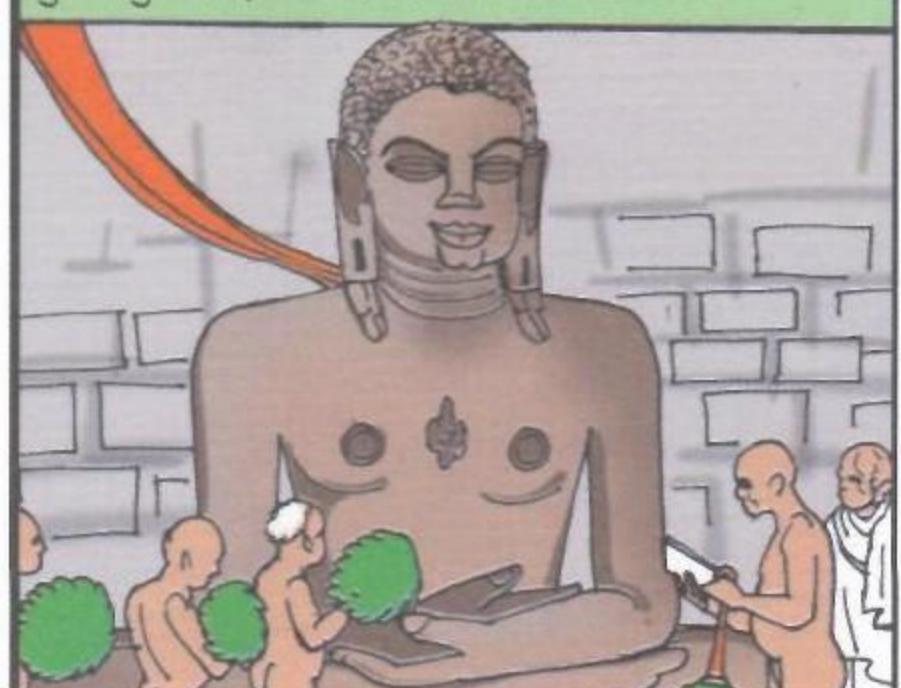
के अतिरिक्त अनेक जैन ग्रंथों का पदानुवाद तथा हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, बंगला आदि भाषाओं में स्फुट रचनाएँ अल्पबय में ही आचार्यप्रबर ने कर डाली। आचार्यप्रबर द्वारा रचित सर्वाधिक रुच्याति प्राप्त मूकमाटी महाकाव्य पर अभी तक 4 डी.टिट., 22 पी.एच.डी., 7 एम.फिल. के शोध प्रबंध तथा 2 एम.एड. और 6 एम.ए. के लघु शोध प्रबंध लिखे जा चुके हैं। देश, विदेश के प्रकांड विद्वानों द्वारा मूकमाटी महाकाव्य पर लगभग 1000 समीक्षाएँ प्राप्त हो चुकी हैं। 300 समीक्षाओं का संकलन रूप ग्रंथ मूकमाटी मीमांसा नाम से तीन भागों में भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हो चुका है। विभिन्न संस्थाओं में यह महाकाव्य स्नातकोत्तर के हिन्दी पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है।

2001 जबलपुर तिलबारा में आचार्यप्रबर के संसंघ बर्षायोग के दौरान एक श्रावक अपने 2-3 माह के शिशु को लाया

आचार्यप्रबर जब से जन्म लिया है
आँख खोलकर किसी को देखा ही नहीं।
आपकी कृपा हो, बेटे की आँखों में
रोशनी आ जाए।

सुनकर आचार्यप्रबर ने कलण
भरी दृष्टि से उस नन्हे शिशु
को देखा आचार्यप्रबर के
देखते ही उस बेटे की दृष्टि
खुल गई और उसने भी
आचार्यप्रबर को देखा।

17 जनवरी 2006 को आचार्यप्रबर के विराट संघ के सान्निध्य में
कुण्डलपुर के बड़ेबाबा नई बेदी में विराजित किये गये।



किसी शिष्य के द्वारा गुरुदेव से हरी
सब्जी ग्रहण करने की प्रार्थना कर
गुरुवर बोले -

“हरी नहीं लेता
तो क्या
हरि का नाम
तो लेता हूँ”

आचार्यप्रबर से एक बार किसी विदेशी ने पूछा -

मुझे यह जानकर बड़ा
आश्चर्य हो रहा है कि
आप स्नान नहीं
करते हैं

किसने कहा
कि मैं स्नान
नहीं
करता?

आप तो एक बार स्नान करते हैं
मैं दो बार स्नान करता हूँ।
दिन में सनलाइट से, रात में
मूललाइट से

जून 1992 कुण्डलपुर में दीक्षा के पूर्व किसी
दीक्षार्थी द्वारा दीक्षा का अर्थ पूछे जाने पर
आचार्यप्रबर ने कहा -

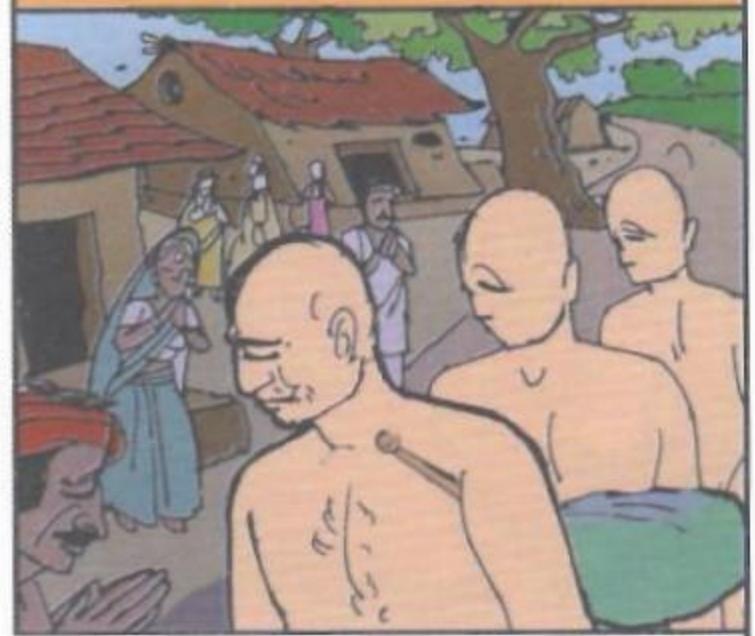
“दीक्षा का अर्थ होता है
संकल्प। पाँचों पाँपों के
त्याग रूप संकल्प”

“इस पद की शोभा मान को
जीतने से है। जिसने मान को
जीत लिया, उसने पद को
सार्थक कर दिया।”

जानते, देखते एवं समझते हुए भी आचार्य प्रबर अपने शिष्यों को उनकी गलती नहीं बताते अपितु आगम की बात रखते हैं, जिससे प्रेरित होकर शिष्यगण स्वयं अपनी गलती का प्रायश्चित लेने उनके पास पहुँचते हैं। उनका कहना है -

“प्रायश्चित अन्तःकरण की शुद्धि का नाम है, यह शुद्धि पर दबाव से नहीं, अपितु स्वप्रेरणा से होती है। जिसे अपनी गलती का अहसास होगा वह उसकी शुद्धि हेतु प्रायश्चित के लिए प्रतिपल तड़पेगा।”

विहार के दौरान आचार्यप्रबर संघ सहित जिन मार्गों से गुजरते हैं उन मार्ग पर जैनेतर बंधु भी हृषित हो उनके स्वागत में चौक पूरकर उनकी आरती बंदना व पाद प्रक्षालन करते हैं।



उनके चरणों में तरह-तरह की भेटें समर्पित करते हैं।

“बाबा हमारे खेत के सारे आम आपके ही हैं। आप इन्हें ग्रहण कीजिए।”

“बाबा ये संतरे हैं, आप इन्हें स्वीकारिये।”

“बाबा अब आप यहाँ से कहीं मत जाना। पानी, दूध, चाय, नाश्ता, भोजन सबकी व्यवस्था हम कर देंगे।”

“बाबा आप हमारी झोपड़ी में चलकर उसे पवित्र करिए।”

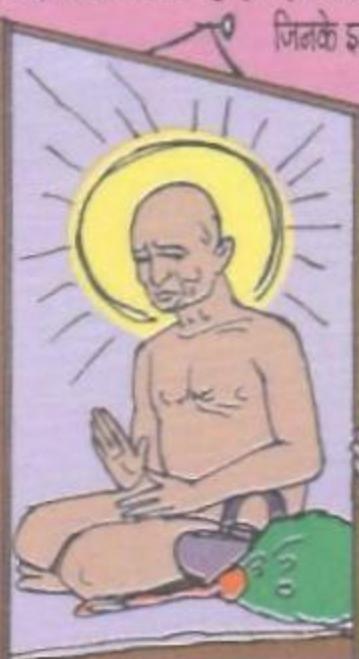
अनेकों जैनेतर बंधुओं ने आचार्यप्रबर के चरणों में अंडा, मांस एवं मदिरापान का आजीवन त्याग किया।

इस सदी के आचार्यप्रबर ही एक ऐसे साधक हैं जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर सर्वाधिक शोधकार्य संपन्न हुए तथा वीर निर्वाण के पश्चात् (आचार्यश्री विद्यासागरजी ही एक ऐसे श्रमग हैं जिनके इतने अधिक छाया चित्रों का निर्माण हुआ तथा जिनकी उद्घातपश्चर्या को लेकर इतने अधिक भजन, कविता, गीत, कवाली, शायरी, लेख,

नाटक, कहानी, उपन्यास एवं निवेद्यों की रचनाएँ हुई हैं।)

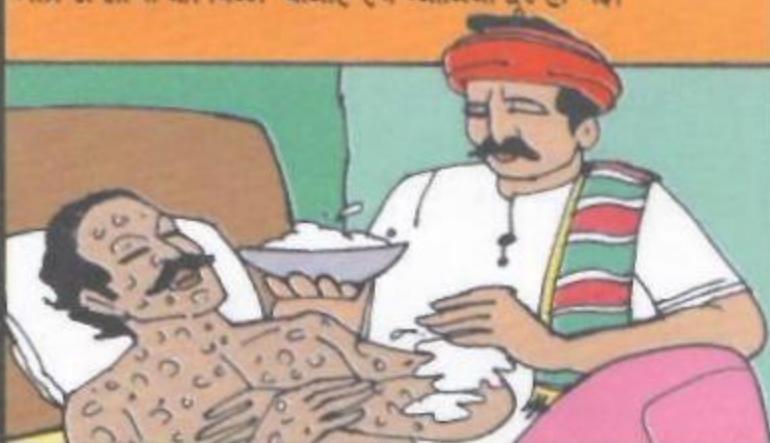
बुद्धेश्वर का प्रत्येक बच्चा नामोच्चारण के साथ ही अपने दिन की शुरुआत करता है। “आचार्यश्री विद्यासागर महाराज की जय”

“नमोत्थु
अछाल छिली।”



आचार्य प्रबर के पावन कर कमलों से
2018 तक 120 मुनि, 172 आर्यिका,
56 ऐलक, 64 क्षुल्लक,
3 क्षुल्लिका दीक्षाएँ सम्पन्न हो चुकी हैं
एवं 38 समाधियाँ
आचार्य श्री जी के सान्निध्य
एवं निर्देशन में हो चुकी हैं।

आचार्यप्रबर के कमण्डल का जल सूखे कुएँ और बाबड़ी में
जालने से अनेकों कुओँ में जल आ गया, उनके घरों का गंधोदक
लगाने से अनेकों के चमरोग दूर हो गये। आचार्यप्रबर के नामोच्चारण
मात्र से लोगों की विद्य-बाधाएँ एवं व्याधियाँ दूर हो गईं।



मध्यप्रदेश के ब्रह्मचारी भाई नितिन जैन, दुर्ग से श्री आलोक
जैन का कैंसर रोग आशीर्वाद से ठीक हो गया।

आंगतुक पाँच-दस मिनट तक आचार्यप्रबर के अंगूठे को हल्के
से पकड़े रहा फिर छोड़ दिया। आचार्यप्रबर से पूछा -



आचार्य श्री जी मन्द मुस्कुरा दिये

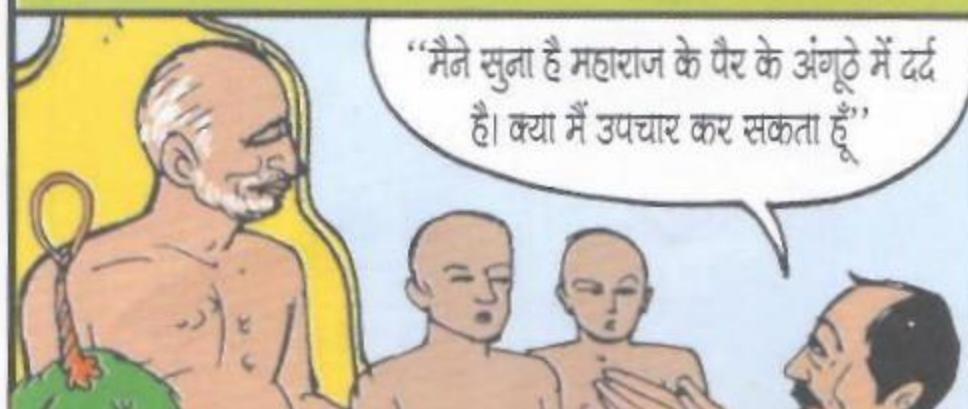
नैनागिर में बर्षा न होने के कारण ब्राह्म मास्, ब्राह्म मास् मचा था
अतः गाँव के सरपंच आचार्यदेव के पास पहुँचे

हुजूर बड़ी किरपा होवे
तनिक पानी बरसा दो



आचार्यश्री ने मुस्कुराकर आशीर्वाद प्रदान किया
और तीन दिन तक लगातार मूसलाधार बारिश रुझी

किसी समय असातावेदनीय कर्म के उदय से आचार्यप्रबर के पैर के
अंगूठे में असहनीय पीड़ा हो गयी, अनेक तरह के उपचार हुए पर
लाभ नहीं हुआ, एक दिन आचार्यप्रबर अपने संघ के साथ बैठे थे,
एक व्यक्ति आया।



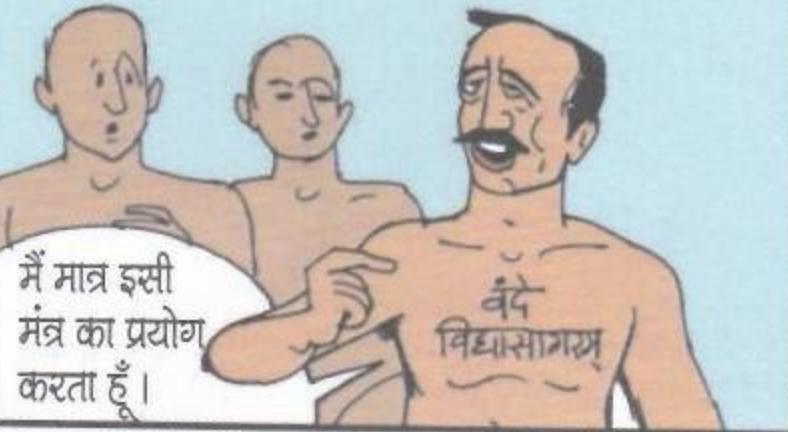
सभी उसे आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे

तभी एक शिष्य ने पूछ ही लिया....



अरे... अरे...
ये क्या कर रहे हो?

बस्त्र उतारकर उसने अपनी
छाती की ओर इशारा किया
उसमें लिखा
था “‘बंदे विद्यासागरम्’”।



आचार्यश्री के ससंघ साहित्य में पाँच राज्यों में पंचकल्याणक सम्पन्न हुए हैं। मध्यप्रदेश के 46, महाराष्ट्र में 2, राजस्थान में 1, छत्तीसगढ़ में 2 गुजरात में 1।



आचार्यप्रबर के आशीर्वाद से सागर (म.प्र.)
में भाग्योदय तीर्थ का निर्माण हुआ

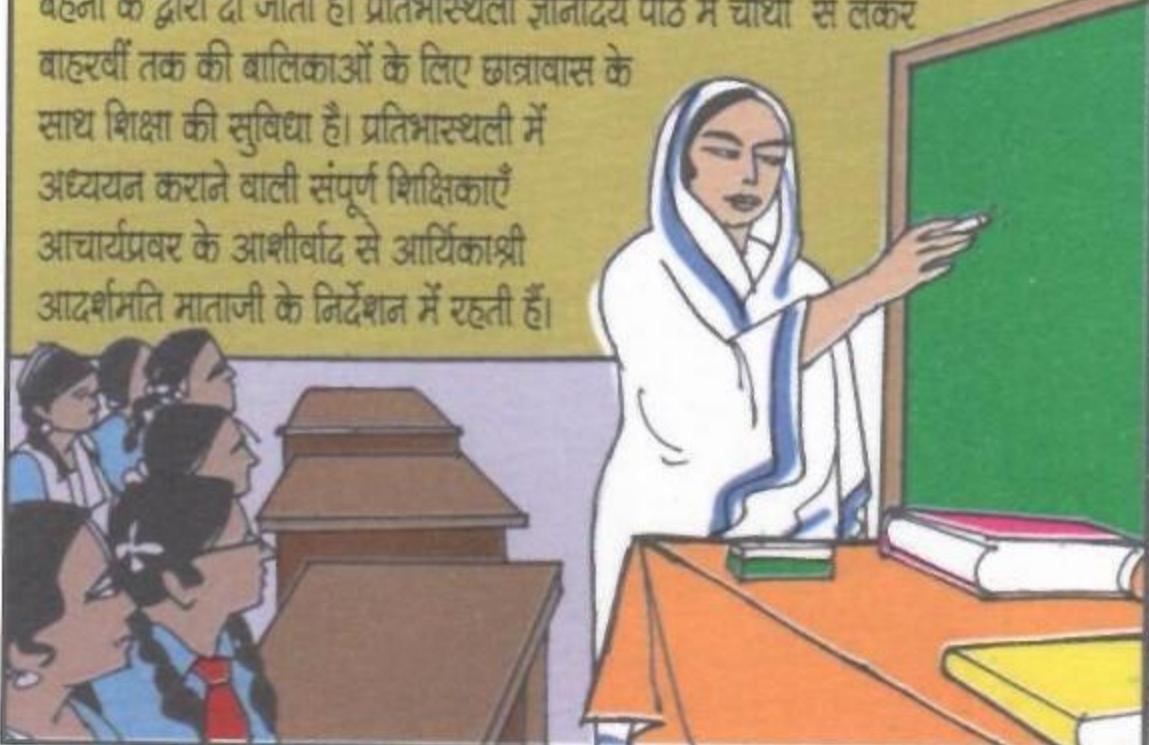


भारतीय संस्कृति की सुरक्षा एवं संवर्धन हेतु आचार्यप्रबर के आशीर्वाद से ज्ञानोदय विद्यापीठ प्रतिभास्थली के नाम से जो 5 (पाँच) शिक्षण संस्थाएँ भारत वर्ष में चल रही हैं।



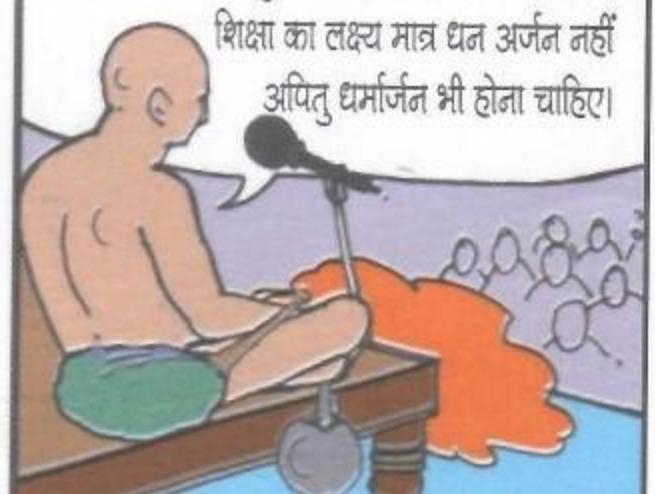
प्रथम शाखा जबलपुर (मध्यप्रदेश)

यहाँ पर आधुनिक शिक्षा प्राचीन गुरुकुल पद्धति के साथ उच्च शिक्षित बाल ब्रह्मचारिणी बहनों के द्वारा दी जाती है। प्रतिभास्थली ज्ञानोदय पीठ में चौथी से लेकर बाहरीं तक की बालिकाओं के लिए छावावास के साथ शिक्षा की सुविधा है। प्रतिभास्थली में अध्ययन कराने वाली संपूर्ण शिक्षिकाएँ आचार्यप्रबर के आशीर्वाद से आर्यिकाश्री आदर्शमति माताजी के निर्देशन में रहती हैं।

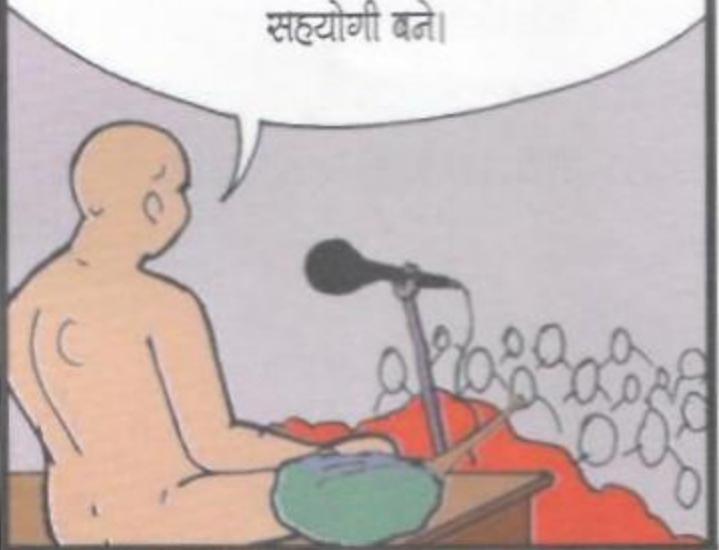


बर्माल में अर्थकारी शिक्षा पद्धति से उत्तम होकर ही आचार्यप्रबर ने शिक्षा के तात्पर्य संस्कार का उत्तम दर्शन अद्यतन हेतु प्रतिभास्थली संस्था को आशीर्वाद प्रदान किया।

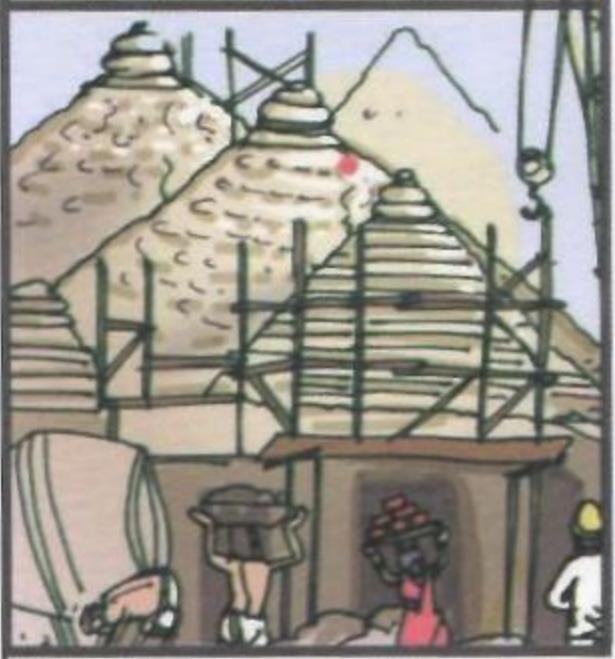
आचार्यप्रबर का उद्देश्य है— ‘शिक्षा मात्र अर्थकारी नहीं होनी चाहिये। परमार्थकारी भी होना-चाहिये।’ शिक्षा जीवन का निर्वाह ही नहीं अपितु जीवन का निर्माण भी सिखाये। शिक्षा का लक्ष्य मात्र धन अर्जन नहीं अपितु धर्मार्जन भी होना चाहिए।



शिक्षा विद्यार्थी को मात्र पैसे कमाने के योग्य ही न बनाकर उसे एक श्रेष्ठ मानव भी बनाए जो भविष्य में देश, धर्म व समाज के विकास में सहयोगी बने।



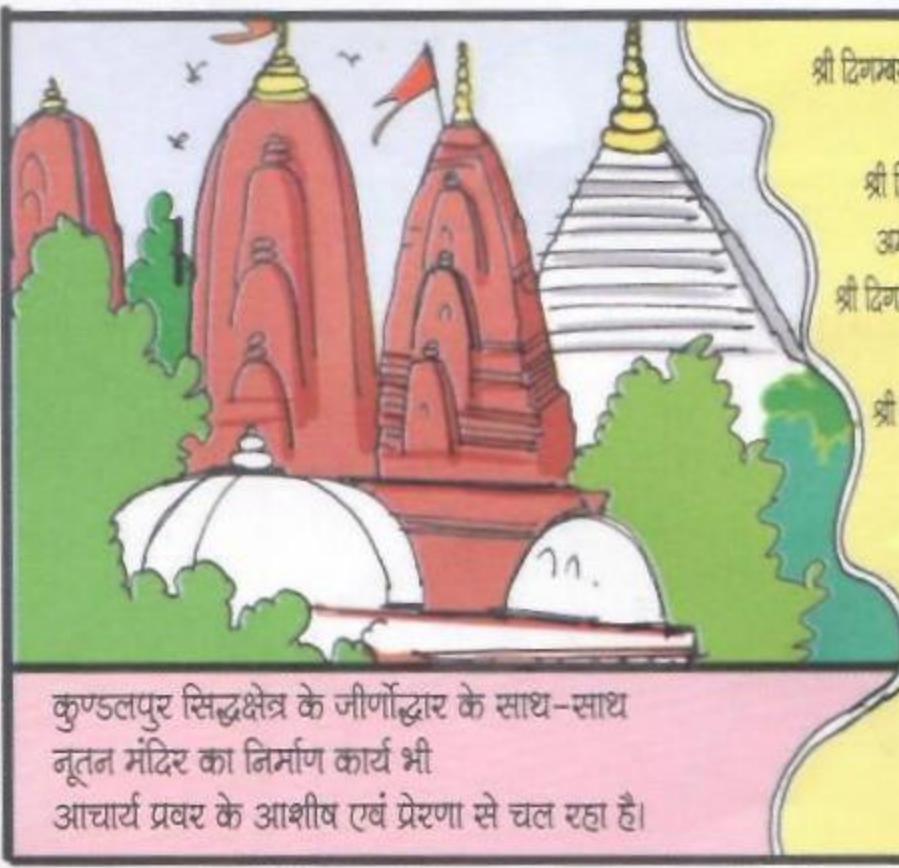
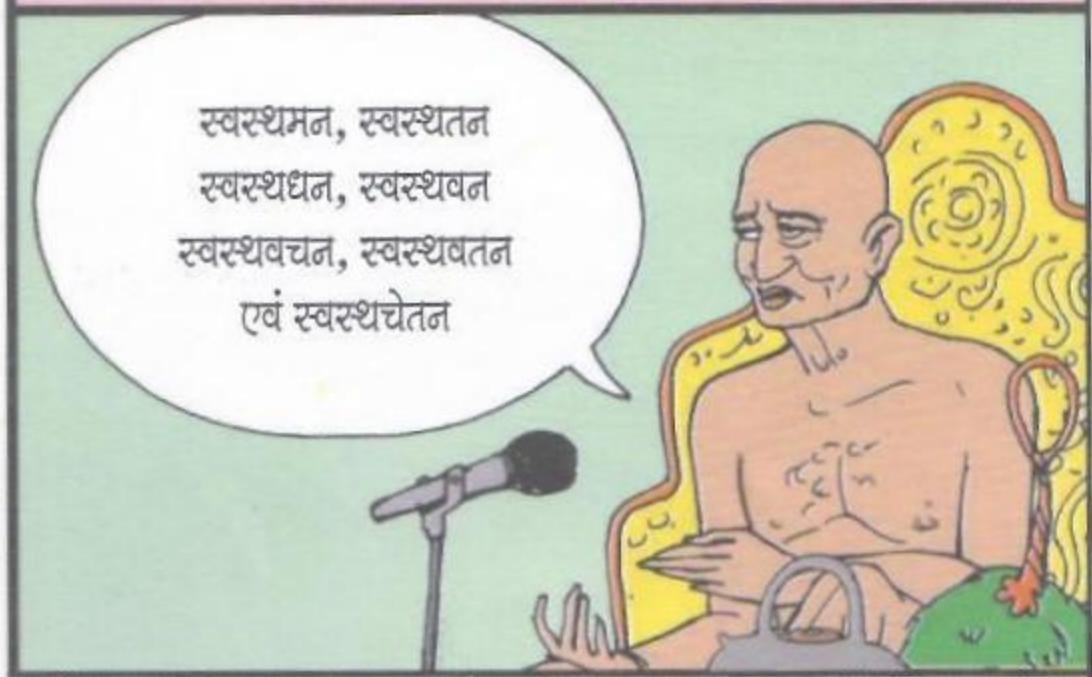
आचार्यप्रबर के आशीर्वाद से भारत देश में विभिन्न प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं नूतन मंदिरों का निर्माण कार्य चल रहा है।



विभिन्न वेरोजगारों को देखते हुए जीवन जीने हेतु स्वरोजगार योजना के तहत नृथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र आचार्यप्रबर के शुभाशीर्वाद से देश के बीस स्थानों में प्रारंभ हो चुके हैं। नवमी कक्षा तक लौकिक शिक्षा होने के उपरांत भी आचार्यप्रबर बहुभाषाविद हैं। हिन्दी, संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी, कहाड़, मराठी, प्राकृत, अपभ्रंश, बंगला आदि भाषाओं पर आचार्यश्रेष्ठ का पूर्ण अधिकार है।



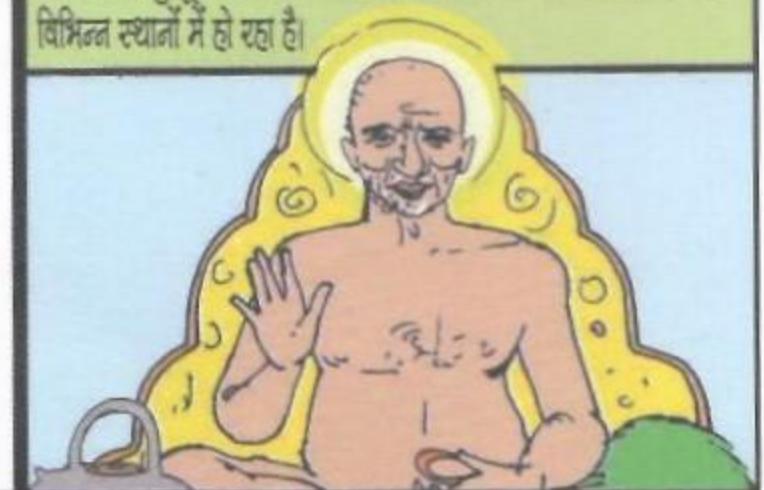
आचार्यप्रबर ने शिक्षा के 7 आधार स्तंभ बताए हैं - स्वस्थमन, स्वस्थतन, स्वस्थधन, स्वस्थवन, स्वस्थवचन, स्वस्थवतन एवं स्वस्थ चेतन।



कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र के जीर्णोद्धार के साथ-साथ नूतन मंदिर का निर्माण कार्य भी आचार्य प्रबर के आशीष एवं प्रेरणा से चल रहा है।

श्री दिग्ंबर जैन सिद्धक्षेत्र सिद्धोदय नेमावर, जिला टेवास (म.प्र.)
श्री दिग्ंबर जैन अतिशय क्षेत्र सर्वोदय अमरकंटक, जिला शहडोल (म.प्र.)
श्री दिग्ंबर जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर, जिला दगोह (म.प्र.)
श्री दिग्ंबर जैन तीर्थक्षेत्र शीतलधाम, विदिशा (म.प्र.)
श्री दिग्ंबर जैन अतिशय क्षेत्र पटनांज, रुही (म.प्र.)
श्री दिग्ंबर जैन अतिशय क्षेत्र चंदगिरी डोगरगढ़ (छ.ग.)
श्री दिग्ंबर जैन अतिशय क्षेत्र बीनाबारह (म.प्र.)

आचार्यप्रबर के आशीर्वाद से अतिशय क्षेत्र महियाजी में वर्ण गुलकुल का पुनःर्गठन हुआ। बीनाबारह अतिशय क्षेत्र में शांतिधारा दुग्ध वाजना को आशीर्वाद प्रदान करके आचार्यश्रेष्ठ ने अनेक, गरीब किलाजों एवं जी जाति को जीवनदान दिया, अशुद्ध डिब्बा बंद हनिकारक खाद्य सामग्री से जनता को बचाने हेतु पूरी मैत्री का निर्माण भी आचार्यप्रबर के आशीर्वाद से देश के विभिन्न स्थानों में हो रहा है।

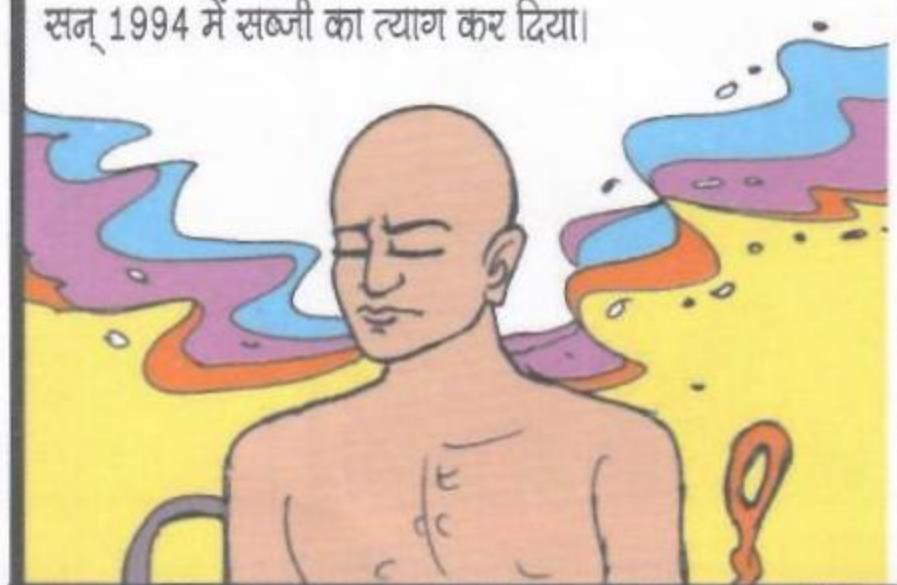


पूज्य आचार्यप्रबर की शुभाशीर्वाद एवं मंगल प्रेरणा से समूचे भारत में विभिन्न शिक्षण संस्थान चल रहे हैं।
 प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ, जबलपुर (म.प्र.), प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ, चंद्रगिरी, डोगरगढ़ (छ.ग.),
 प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ, रामटेक, नागपुर (महाराष्ट्र) प्रशासनिक शिक्षण संस्थान, जबलपुर (म.प्र.),
 श्री शांति विद्यासागर छात्रावास, दिल्ली, उमरगा (महाराष्ट्र), प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ, पपौरा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
 प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ, इंदौर, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन, गुरुकुल, हैदराबाद,
 श्री विद्यासागर इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, भोपाल (म.प्र.), प्रतिभा प्रतीक्षा कन्या छात्रावास, इंदौर (म.प्र.)



25 अगस्त 1999 इंदौर गोमटगिरी वर्षायोग के दौरान भारत के तात्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी एवं 14 अक्टूबर को भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी म.प्र. राजधानी भोपाल बनसी में आ. प्रबर के दर्शनार्थ पद्धारे। उन्होंने गुरुदेव से चर्चा भी की एवं रामटेक (नागपुर महाराष्ट्र) में भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी दर्शनाथ पद्धारे मिला-मिला समय एवं मिला स्थानों में अनेकों राज्य के मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री, सांसद एवं विद्यायकों ने आचार्यप्रबर के दर्शन कर धर्मलाभ लिया।

सन् 1979 में फलो का त्याग आजीवन (घी लेना स्वीकार), सन् 1983 में थूकने का त्याग, सन् 1985 में चटाई का त्याग, सन् 1994 में सब्जी का त्याग कर दिया।



गुरु के भी गुरु बनकर जिन्होंने श्रमण संस्कृति को ऊँचाईयाँ प्रदान की ऐसे जिनशासन के सर्वोच्च ध्वज आचार्यश्री विद्यासागर जी इस धरती पर युगों-युगों तक जयवंत हो।

नाम अमर गुरु का किया, विद्यासागर संत ।
 गुरु के भी तुम गुरु बने, रहो सदा जयवंत ॥

